अधिवेशन विशेष

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 43 ■ अंक 05 ■ जनवरी 2022 ■ ₹ 10 ■ पृष्ठ 36

आत्मगौरव भाव लेकर देश आगे बढ़ चला है

अधिवेशन की झलकियां

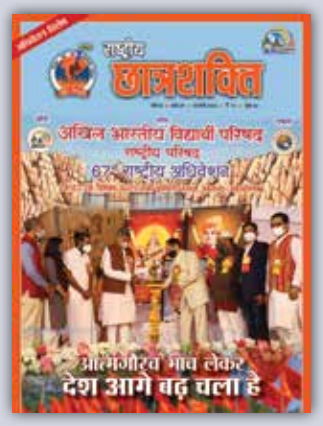

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 43, अंक 05
जनवरी, 2022

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 इच्छाओं से नहीं इरादों से होता है राष्ट्र का निर्माण: कैलाश सत्यार्थी

ये पंडाल एक लघु समुद्र है जिसमें दुनियाभर की लहरें गोते लगा रही हैं। मैं यहां पर परिषद के कार्यकर्ताओं के भीतर उठती तेजस्वी तरंगों को महसूस कर पा रहा हूं। मुझे लगता है...

संपादकीय	04
देश भर में एक लाख से अधिक ध्वजारोहण कर ऐतिहासिक बना 'एक गांव – एक तिरंगा अभियान'	08
सेवा, संस्कार एवं देशभक्ति का संगम अमर बलिदानी कैप्टन रमन बक्शी प्रदर्शनी	11
संस्कारधारी की धरा पर दिखी भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता	13
खुले अधिवेशन में अभाविप ने भरी भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण की हुंकार	14
दिव्यांगजनों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाना, मेरे जीवन का लक्ष्य: कार्तिकेयन गणेशन	17
TRIBAL PRIDE DAY CELEBRATION IS HONORING THE DEDICATION OF TRIBAL SOCIETY	18
स्वाधीनता 75 : राष्ट्रीयत्व एवं स्वावलंबन का उद्घोष	19
शिक्षा की पवित्रता को बचाने हेतु शिक्षा समुदाय आगे आये	23
व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला है अभाविप : वी. डी. शर्मा	24
अभाविप के 75 वर्ष की उपलब्धियां और आगे की दिशा	25
PRESENT SCENARIO	29
सदैव प्रेरक रहेंगे नेताजी	31
परिसर गतिविधियों में खेल बने प्राथमिकता	33
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद – राष्ट्रीय पदाधिकारी 2021–22	34

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

दुनिया के सामने कोरोना की तीसरी लहर गंभीर चुनौती के रूप में आ खड़ी हुई है। भारत भी इसका सामना करने के लिये तैयारी कर रहा है। पिछली दो लहरों ने दुनिया के तमाम देशों की आर्थिक चूलें हिला दी हैं। ऐसे में तीसरी लहर का सामना करना बहुत कठिन है, लेकिन इसके अतिरिक्त कोई विकल्प भी नहीं है।

कोरोना की विभीषिका जब प्रकट हुई तो भारत ऐसी किसी आपदा के लिये तैयार नहीं था। सात दशकों में स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रगति सांकेतिक ही थी। अचानक आयी मानवनिर्मित इस विपत्ति का सामना करने के लिये शेष विश्व की भांति ही भारत को अपने सारे संसाधन झोंकने पड़े। इसके बावजूद भी पहली और दूसरी लहर, विशेषकर दूसरी लहर का व्यापक असर हुआ। देश में शायद ही कोई स्थान रहा हो जहां के लोगों को जान–माल का नुकसान न उठाना पड़ा हो। संगठन के अनेक कार्यकर्ता भी हमसे बिछुड़ गये।

यह संतोष का विषय है कि भारतीय समाज ने इस विभीषिका के आगे घुटने टेकने के बजाय उसका डट कर मुकाबला किया। राष्ट्रीय नेतृत्व देश का आत्मविश्वास बनाये रखने में सफल रहा। संक्रमण से जूझते हुए स्वास्थ्य ढ़ांचे को मजबूत करने की जिम्मेदारी निभाने में सरकार को स्वयंसेवी संस्थाओं का अपार सहयोग प्राप्त हुआ। छात्र–युवाओं ने अपनी जान जोखिम में डालकर भी सेवाकार्यों की शृंखला को अटूट बनाये रखा। एक राष्ट्र के रूप में हम इस वैश्विक आपदा का सामना करने में सफल रहे।

पिछली दो लहरों का सामना करने के लिये देश को अपने संसाधनों का बहुलांश निवेश करना पड़ा। पटरी पर आती अर्थव्यवस्था के लिये कोरोना की तीसरी लहर कठिन स्थिति उत्पन्न करेगी। लेकिन इससे लड़ने और जीतने के अलावा कोई विकल्प दुनिया के पास नहीं है। पहले से बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के साथ आत्मविश्वास से भरा भारत इस चुनौती से भी यशस्वी होकर निकलेगा, यह विश्वास है।

अभाविप का 67वां राष्ट्रीय अधिवेशन मध्यप्रदेश के जबलपुर नगर में सम्पन्न हुआ जिसका विस्तृत विवरण इस अंक में संकलित है।

आपका

संपादक

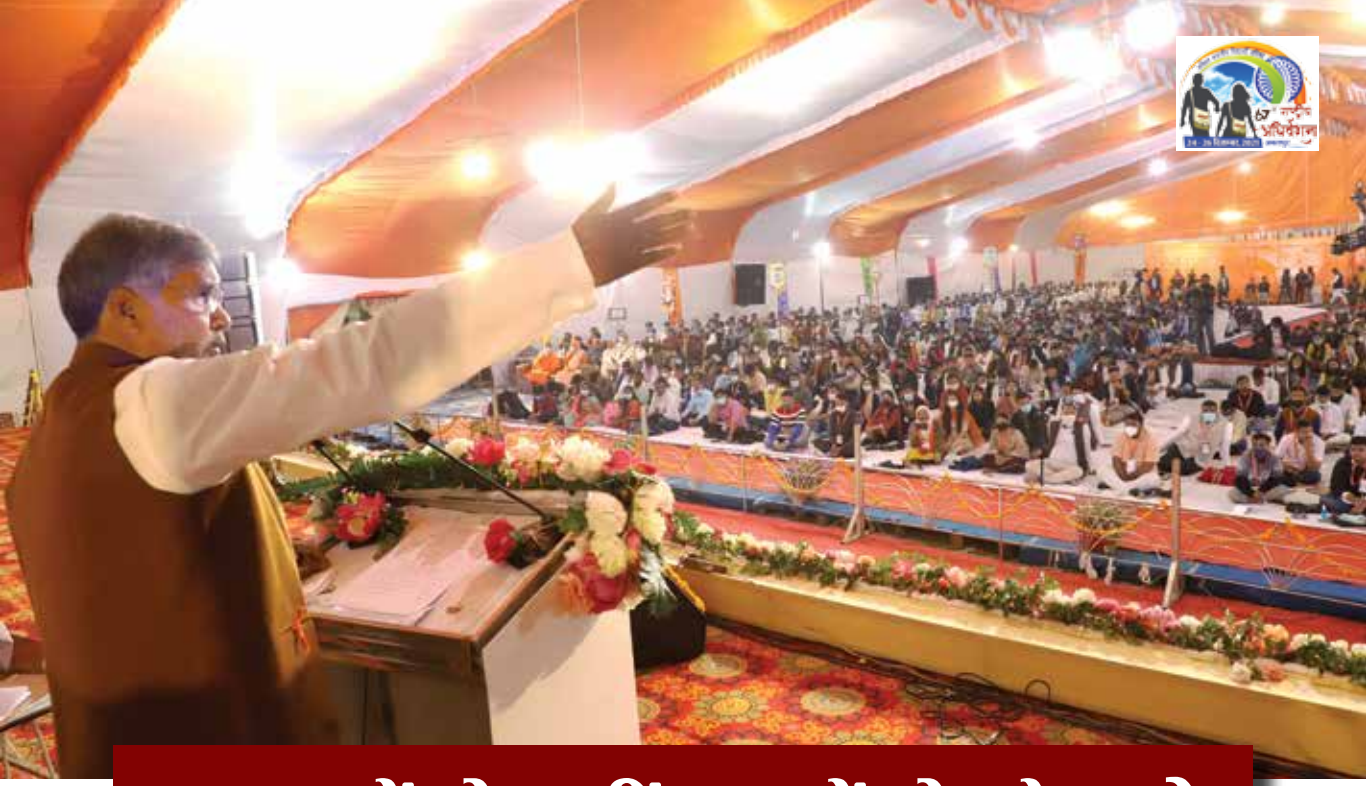

इच्छाओं से नहीं इरादों से होता है राष्ट्र का निर्माण: कैलाश सत्यार्थी

ये पंडाल एक लघु समुद्र है जिसमें दुनियाभर की लहरें गोते लगा रही हैं। मैं यहां पर परिषद के कार्यकर्ताओं के भीतर उठती तेजस्वी तरंगों को महसूस कर पा रहा हूं। मुझे लगता है इस सुविचारित और संस्कारित तरंग को यह पंडाल कैद नहीं कर सकता, जब विचारों की हवा चलेगी तो इसकी वैचारिक सुंगध दूर तक जायेगी। यह बात अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 67 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल नोबेल पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात समाजसेवी कैलाश सत्यार्थी ने कही। उन्होंने अधिवेशन में शामिल होने के पूर्व के संस्मरण को सुनाते हुए कहा कि मैं जब यहां आ रहा था तो मेरे सहयोगी ने कहा कि भाईसाहब आप अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में जा रहे हैं, मैं परिषद का कार्यकर्ता रहा हूं आपके लिए कुछ लेख या भाषण लिख दूं क्या ? चूंकि वहां पर देश भर की युवा तरूणाई शामिल होगी। मैंने उनसे कहा कि दूसरों के पास बोलने के लिए तैयारी की जरूरत पड़ती है, अपनों से संवाद करने के लिए शब्दों की नहीं अपितु भावनाओं की जरूरत होती है। उनके इस वक्तव्य को सुनते ही पूरा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

भारत माता की जय और वंदे मारतम के उद्घोष से अपने वक्तव्य को प्रारंभ करने वाले श्री सत्यार्थी ने कहा कि संस्कारधानी जबलपुर आकर मैं भाव विभोर हो गया हूं। इस संगम में आए विभिन्न राज्यों के युवाओं का जोश देखकर आज भारत माता भी गर्व महसूस कर रही होगीं। राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। युवा पीढ़ी विध्वंसक नहीं बल्कि सृजन का आधार है। अग्नि के एक कण से ही आग फैलती है और हम सब के अंदर जल रही अग्नि से ही देश समाज सुधार की ओर अग्रसर होगा।

जीवंत छात्र संगठन है विद्यार्थी परिषद : छगन भाई पटेल

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष छगन भाई पटेल ने कहा कि इस अधिवेशन में प्रत्यक्ष ही नहीं बल्कि आभासी माध्यम से भी विद्यार्थी परिषद के लाखों कार्यकर्ता जुड़े हुए हैं। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक उद्देश्य के साथ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का कार्य प्रारंभ हुआ जिसका पंजीकरण 9 जुलाई 1949 को हुआ। स्थापना के साथ ही विद्यार्थी परिषद ने संविधान सभा के सामने देश का नाम भारत करने, राष्ट्रभाषा हिंदी हो, राष्ट्रगीत वंदे मातरम हो जैसे तीन मांगे रखी। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के 74 वर्ष की यात्रा में अभाविप ने ज्ञान शील एकता का मंत्र लिए न केवल राष्ट्रीय आंदोलन में महती भूमिका निभाई है बल्कि दृढ़ता के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी सार्थकता को सिद्ध की है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने इन 74 वर्षों की इस यात्रा में विश्व के सामने अनूठा मॉडल प्रस्तुत किया है। विद्यार्थी परिषद शैक्षिक परिसर से आगे निकलकर समाज में साकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर रहा है। 70 के दशक में देशव्यापी आंदोलन करते हुए दिल्ली में विशाल संख्या में प्रदर्शन किया और सरकार से परमाणु बम बनाने, वि.वि. प्रशासन में छात्रों की भूमिका सुनिश्चित करने एवं मताधिकार की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष करने की मांग की, फलस्वरूप 1974 में भारत परमाणु संपन्न राष्ट्र बना, छात्रसंघ चुनाव शुरू हुए एवं विश्वविद्यालयीन प्रशासन में छात्रों की सहभागिता शुरू हुई साथ ही 1988 में संविधान में 61 वां संशोधन कर मताधिकार की आयु को 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष किया गया।

आपातकाल के दौरान जब लोकतंत्र का गला घोंटा जा रहा था तो लोकतंत्र की बहाली के लिए परिषद कार्यकर्ताओं ने आदोंलन किये, जेल गये फिर भी अपनी हिम्मत नहीं हारी परिणामस्वरूप पुनः लोकतंत्र की बहाली हुई। जम्मू-कश्मीर में जब तिरंगे का अपमान किया गया तो 90 के दशक में विशाल तिरंगा यात्रा का आह्वान कर कश्मीर के लालचौक पर तिरंगा फहराया। तिरंगा रैली में देश भर से 10 हजार से अधिक कार्यकर्ता शामिल हुए थे। बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ जनजागरण करते हुए चलो चिकननेक रैली का आयोजन किया और बिहार के किशनगंज में विशाल प्रदर्शन किया। समस्या नहीं समाधान को केन्द्र में रखकर मिशन साहसी का आयोजन कर लाखों छात्राओं को आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया है। कोरोनाकाल में परिषद के कार्यकर्ताओ ने अपने जान की बाजी लगाकर लोगों की सेवा की, इसलिए मैं कहता विद्यार्थी परिषद एक जीवंत छात्र संगठन है।

ईंट, गारे और पत्थर से राष्ट्र निर्माण नहीं होते, युवाओं के सपनों से राष्ट्र बनते हैं

मुख्य अतिथि कैलाश सत्यार्थी ने अभाविप कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि ईंट, गारे और पत्थर से राष्ट्र निर्माण नहीं होते हैं, राष्ट्र का निर्माण युवाओं के सपनों से होता है। राष्ट्र निर्माण इच्छाओं से नहीं इरादों से होता है। राष्ट्र निर्माण दब्बू बनकर नहीं साहस से होता है। राष्ट्र की मजबूती इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे बोलने, सोचने और करने में अंतर न हो।युवाओं के सपने, इरादे संकल्प, साहस और सहकार से ही राष्ट्र निर्माण होता है। हमारी सीमा अनंत है।पूरी दुनिया एक घोसले की तरह है, जिसमें हमसभी एक साथ निवास करते हैं।

भारत में करोड़ों समस्याएं, अरबों समाधान

अपने संस्मरण को याद करते हुए सत्यार्थी जी ने कहा कि नोबेल पुरस्कार मिलने के तुरंत बाद विदेशी पत्रकारों ने मुझसे देश के हालात पर सवाल किये। सवाल के जवाब मैंने कहा कि कि हमारे देश में करोड़ों समस्याएं हो सकती है लेकिन करोड़ों समस्याओं का समाधान भारत में ही है। हमारा देश समस्याओं को उजागर करने वाला नहीं बल्कि उसका समाधान करने पर विश्वास करता है। यहां करोड़ों समस्याएं हो सकती है। मगर हम वो देश हैं जो समस्या के अरबों समाधान निकालना जानते हैं।

बलिदान स्मारक बना प्रेरणा केन्द्र

अधिवेशन परिसर में बलिदान स्मारक बनाया गया था। देश सेवा में जीवन देने वाले वीर योद्धा अमर बलिदानी सीडीएस बिपिन रावत व उनकी धर्म पत्नी सहित देश के सभी वीरों की याद में परिसर के मध्य में बने बलिदान बनाया गया था। वहां वीर सपूतों कि याद में परिसर के मध्य में बलिदान स्मारक बनाया गया था, जिस पर वीर सपूतों की सेवा गाथा को दर्शाया गया था ताकि युवाशक्ति प्रेरणा प्राप्त कर सके।

रानी दुर्गावती शौर्य स्मारक

अधिवेशन परिसर के मध्य में रानी दुर्गावती का विराट स्मारक एवं विशेष केन्द्र बिंदु था। परिसर में प्रवेश करते ही इस स्मारक के दर्शन होते थे। रानी दुर्गावती महाकौशल की वीरांगना है, जिन्होंने राष्ट्र की सेवा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर युवा आगे बढ़ रहे हैं।

अनुशासित संगठन है विद्यार्थी परिषद

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जो अपनी एकता के लिए जाना जाता है। अभाविप विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। परिषद परिवार के विचार यहां की संस्कृति से जुड़ी हुई है। आये दिन देश भर में बेटियों और बच्चों के साथ दुराचार की घटनाएं देखने को मिलती है। विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं को बेटियों के लिए सुरक्षा चक्र बनना होगा।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का 67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन जबलपुर में प्रारम्भ हुआ। अधिवेशन के उद्घाटन एवं प्रा यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार के वितरण में नोबल शांति पुरस्कार प्राप्तकर्ता कैलाश सत्यार्थी, प्रा यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार 2021 विजेता कार्तिकेयन गणेशन, अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा छग्गनभाई पटेल एवं राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी उपस्थित रहे, क्षेत्रीय संगठन मंत्री नीरव गिलानी, अधिवेशन स्वागत समिति अध्यक्ष जीतेन्द्र कुमार जामदार, स्वागत समिति सचिव संदीप जैन, महाकौशल अभाविप प्रान्त अध्यक्ष संदीप खरे एवं प्रदेश मंत्री सुमन यादव उपस्थित रहे। अभाविप के अधिवेशन में देश भर के 700 से अधिक प्रतिनिधि प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहे एवं हज़ारों प्रतिनिधि देश भर के 2704 स्थानों पे आभासीय माध्यम से कार्यक्रम से जुड़े।

मैं अभिभूत हूँ और मेरे पास शब्द नहीं हैं: गणेशन

यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार विजेता कार्तिकेयन गणेशन ने कहा कि मैं अभिभूत हूँ और मेरे पास शब्द नहीं हैं कि ये पुरस्कार मुझे क्यों दिया गया। मैं जहां से आता हूँ वहां कोई सुविधाएं नहीं हैं पर अभाविप मुझे ढूंढने में सफल हुआ। मै 15 वर्षों तक अनाथालय में रहा और अब उसी अनाथालय का निदेशक हूं। मेरे जीवन का उद्देशय दिव्यांगजन के लिए काम करने का है और यह पुरस्कार मुझे अपने कार्य को और बेहतर करने के लिए प्रेरित करेगा। मुझे समझ आया है कि जब तक आप खुद को साबित नहीं कर लेंगे तब तक आपके कार्यों की सराहना कोई और नहीं करेगा। ■

देश भर में एक लाख से अधिक ध्वजारोहण कर ऐतिहासिक बना

'एक गांव - एक तिरंगा अभियान'

अधिवेशन के प्रथम दिन उदघाटन समारोह के पश्चात अभाविप की राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी ने कार्यकर्ताओं के बीच विद्यार्थी परिषद द्वारा वर्ष भर किये गये कार्यों का उल्लेख किया। प्रतिवेतन प्रस्तुत करने से पूर्व उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 67 वें अधिवेशन में देश के विभिन्न भागों से पधारे सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। महामंत्री प्रतिवेदन के माध्यम से वर्ष 2020-21 में अभाविप द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि वर्षों के संघर्ष, त्याग, बलिदान तथा अपनों को खोने के पश्चात 15 अगस्त 1947 को हम स्वाधीन हुए। वर्षों की गुलामी हमारे साहस और स्वाभिमान को नहीं तोड़ पाया। 15 अगस्त 2021 को भारत अपनी स्वाधीनता के 75 वें वर्ष में प्रवेश किया। वर्ष 2021-22 स्वाधीनता का अमृत वर्ष है, जिसे पूरे देश में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर यह ध्यान आया कि देश के अनेक स्थानों पर स्वाधीनता के पश्चात से 15 अगस्त 2021 तक कभी भी ध्वजारोहण नहीं हुआ था। अधिकांशतः शैक्षणिक संस्थानों एवं सरकारी भवनों में ही झंडोतोलन होता था, जिस कारण आम नागरिकों की सहभागिता नहीं हो पाती थी। इन सभी विषयों का अनुभव करते हुए गांव, बस्ती एवं झुग्गियों में रहने वाले समान्य जनों को हृदय में स्थित तिरंगे के प्रति सम्मान प्रकट करने का अवसर मिल सके, गांव – गांव में आजादी के अमृत महोत्सव में लोगों की सहभागिता हो, इस हेतु 'एक गांव – एक तिरंगा अभियान' अभाविप अपने हाथों में लिया। अंडमान निकोबार द्वीप से लेकर मणिपुर के मोइरंग तक और जम्मू-कश्मीर के बारामूला से लेकर मलकानगिरी ओडिशा के सुदूर नवरंगपुर तक, लाखों नागरिकों ने 75वें भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उत्सव में भाग लिया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के "एक गांव, एक तिरंगा" अभियान के उत्सव में देश भर में 1 लाख से अधिक स्थानों पर तिरंगा ध्वज फहराया गया।इस अभियान के निमित्त देश के अलग-अलग स्थानों को चिन्हित कर वहां के लोगों के साथ ध्वजारोहण किया गया तथा शोभा-यात्रा, सामूहिक राष्ट्र-गान गायन, भारत माता पूजन,

सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रतियोगिताओं आदि कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनमानस में देशभक्ति की भावना के प्रकटीकरण का भी कार्य किया गया।

राष्ट्रीय कार्यक्रमों की बात करें तो राष्ट्रीय युवा दिवस, समरसता दिवस एवं राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस पर अभाविप द्वारा देश भर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस वर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस पर 34 ,सौ से अधिक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसमें 47 सौ से अधिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यकर्ताओं की सहभागिता की बात करूं तो देश भर में चार लाख से अधिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। प्रत्येक वर्ष अभाविप अपने स्थापना दिवस यानी नौ जुलाई को राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाती है लेकिन कुछ स्थानों पर आभासी माध्यम (ऑनलाइन) मनाया गया वहीं अधिकतर स्थानों पर प्रत्यक्ष रूप से संपन्न हुआ। 43 सौ से अधिक स्थानों पर 61 सौ से अधिक कार्यक्रम आयोजित किये गये जिसमें दो लाख से अधिक कार्यकर्ताओं एवं आम नागरिकों की सहभागिता रही। वहीं छः दिसंबर सामाजिक समरस्ता दिवस (बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर महापरिनिर्वाण दिवस) पर देश भर में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसमें डेढ़ लाख से अधिक कार्यकर्ताओं ने सहभाग लिया। वहीं विशेष आग्रह के कार्यक्रम के तहत स्त्री शक्ति दिवस, भगिनी निवेदिता जयंती एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर देशभर में छात्राओं से जुड़े अनेक अनुकरणीय कार्यक्रम आयोजित किये गये।

परिषद की पाठशाला

कोरोना महामारी से देश के प्रत्येक क्षेत्र को क्षति पहुंची है। तालाबंदी की परिस्थिति में शैक्षणिक संस्थान भी बंद हुए। छात्रों की पढ़ाई जारी रखते हुए कई शिक्षण संस्थानों ने आभासी माध्यम (ऑनलाइन) शिक्षा देना आरंभ किया परंतु देश में एक वर्ष ऐसा भी है जो आर्थिक रूप से कमजोर है, स्मार्ट फोन खरीद पाने में अक्षम है वैसे छात्रों की पढ़ाई बाधित हुई। ऐसे विद्यार्थियों की पढ़ाई निर्बाध रूप से चले, इसे सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अभाविप ने गत वर्ष से परिषद की पाठशाला आरंभ की, जिसके माध्यम से देश भर के गांव, बस्तियों तथा झुग्गियों में रहने वाले विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

ज्ञात – अज्ञात हुतात्मा सर्वेक्षण

सैंकड़ों वर्षों की पराधीनता के विरूद्ध निरंतर भारत एकजूट होकर संघर्ष किया और अगणित स्वाधीनता सैनानियों के बलिदान के पश्चात हमारा देश स्वतंत्र हुआ परंतु षड़यंत्र के तहत देश के युवाओं से स्वाधीनता संग्राम के सैनानियों के नाम छुपाने का प्रयास किया गया तथा संपूर्ण समाज को यह बताया कि एक परिवार विशेष के प्रयासों से देश को स्वाधीनता मिली है। तथाकथित इतिहासकारों ने भी अन्य स्वाधीनता के महानायकों जनमानस के बीच नहीं आने दिया। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर अभाविप ने यह निर्णय लिया कि गुमनाम, ज्ञात – अज्ञात स्वाधीनता के नायकों को समाज के बीच लाएगें।

ज्ञात – अज्ञात स्वाधीनता सैनानियों की जानकारी एकत्रित करने के लिए अभाविप देशव्यापी 'ज्ञात – अज्ञात सर्वेक्षण अभियान' चला रही है, जिसमें परास्नातक विद्यार्थियों और शोधार्थियों का समूह इन्टर्न के रूप में गांव, कस्बो और महानगरों में स्वाधीनता सैनानियों के परिवार से संपर्क कर अथवा सेनानी से संपर्क कर संपूर्ण जानकारी एकत्र कर रहे हैं।

31 लाख 45 हजार से अधिक विद्यार्थी/प्राध्यापक ले चुके हैं अभाविप की सदस्यता

कोरोना की दूसरी लहर के पश्चात् अभाविप का सदस्यता अभियान करने हेतु कार्यकर्ता अत्यंत उत्साहित थे। उत्साहित कार्यकर्ताओं के द्वारा किसी प्रांत में आभासिक माध्यम से तो किसी प्रांत में प्रत्यक्ष रूप से सदस्यता संपन्न की। कोरोना की परिस्थिति के कारण आज भी शैक्षणिक संस्थान प्रत्यक्ष रूप से नहीं खुले है, जिस कारण से प्रान्तों में सदस्यता का एक चरण तो पूर्ण हो चुका है तथा कुछ में संस्थान खुलने के बाद दूसरा चरण चलाने की योजना है। इस वर्ष गांवों, बस्तियों तथा नगरों - नगरों में जाकर भी सदस्यता की गई है। अभी तक चल रहे सदस्यता अभियान में 31,45,180 विद्यार्थी एवं प्राध्यापक अभाविप के सदस्य बन चुके है।

कोरोना द्वितीय लहर सेवा कार्य

चीन से आए कोरोना वायरस ने न केवल आर्थिक क्षति पहुंचाई अपितु मानवीय क्षति का सामना भी करना पड़ा जो अत्यंत पीडादायी था। कोरोना की दूसरी लहर ने किसी के घर का संतान छीन लिया तो किसी का अभिभावक छीन कर उन्हें अनाथ कर दिया। एक रात में ही लोगों का संपूर्ण जीवन ही बदल गया। चिकित्सालयों में बेड कम पड गए, चिकित्सालयों में ऑसीजन सिलेंडर कम पडने लगे, कहीं लोग रक्त मांगते तो कही प्लाज्मा के लिए गुहार लगाते ऐसे में कोरोना की दूसरी लहर से अभाविप के कार्यकर्ता भयभीत नहीं हुए । जब आप लोग घर से निकलने में भी डर रहे थे तब अभाविप कार्यकर्ता भय मुक्त होकर सड़कों पर उतरे। सोशल मीडिया पर सहायता हेतु नम्बर साझा करना, जरूरतमंद के घरऑक्सीजन सिलिण्डर पहुंचाना, कोरोना के मरीजों वाले चिकित्सालय के बाहर महीनों तक दिन और रात भोजन पैकेट वितरण, दवा घर-घर तक पहुंचाना, रक्त एवं प्लाज्मा दान, दाह संस्कार करना आदि कार्य कार्यकर्ताओं ने बिना थके किया। कोरोना की श्रृंखला को तोडने के लिए अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा गांव, सेवा बस्तियों तथा झुग्गियों में स्क्रीनिंग का अभियान चलाया गया साथ ही कोरोना रोधी टीकाकरण के प्रति लोगों को जागरूक करने तथा महीनों तक कोविड टीकारण केन्द्रों पर स्वयं सेवकों के रूप में भी कार्यकर्ताओं ने काम किया। आंकड़ों की बात करूं तो अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा देशभर में 20985 यूनिट रक्तदान किया गया तथा कुल 6222 यूनिट प्लाज्मा दान किया गया। घर पर इलाज हेतु अभाविप कार्यकर्ताओं के द्वारा 356326 ऑक्सीजन सिलेण्डर उपलब्ध कराया गया। साथ ही समाज को जागरूक करते हुए कुल 236282 लोगों का टीकाकरण करवाया। अभाविप द्वारा दिए गए सहायता देषभर के 54637 अभाविप कार्यकर्ताओं के द्वारा लोगों की सहायता की गई तथा 2022425 भोजन पैकेट वितरित किए गए। साथ ही कोरोना को बढ़ने से रोकने के लिए विभिन्न नाम से स्क्रीनिंग के लिए अभियान चलाया गया।

जनजातीय गौरव दिवस

जनजातीय समाज ने भारत की सनातन परंपरा और संस्कृति को आज भी संजोए रखा है । वनवासी समाज का स्वाधीनता संग्राम में योगदान, प्रकृति रक्षण हेतु अथवा प्रकृति संतुलन बनाए रखने हेतु प्रचलित परंपराओं का अभ्यास आदि संपूर्ण समाज के लिए अनुकरणीय है। स्वाधीनता संग्राम में जनजातीय समाज के नायकों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया परंतु षड़यंत्रपूर्वक जनजातीय समाज के शौर्य और पराक्रम को छिपाया गया।15 नवंबर धरती आबा बिरसा मुण्डा जी की जन्मतिथि है इस तिथि को इस वर्ष केन्द्र सरकार द्वारा 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की । यह घोषणा संपूर्ण जनजातीय समाज के बलिदान तथा त्याग का सम्मान है। 15 नवम्बर को धरती आबा का जन्मदिन पूरे देश में अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा उत्साह एवं स्वाभिमान के साथ मनाया गया।

कार्तिक उरांव जयंती

29 अक्टूबर 1924 को जन्में डॉ. कार्तिक उराव न केवल एक राजनीतिज्ञ थे अपितु जनजाति समाज के हितों और उनकी परंपराओं के पक्षधर थे जनजातीय समाज की परंपराओं, वस्त्र आभूषण आदि के संरक्षण हेतु संविधान ने जनजातीय समाज को आरक्षण दिया गया था। आज अनेक षडयंत्रकारी षडयंत्रपूर्वक जनजातीय समाज का मतातरंण करवा रहे है और उन सम्प्रदायों की परंपरओं को स्वीकार करवा रहे है ऐसे में जनजातीय समाज को आरक्षण दिए जाने का उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा है। इस षड़यंत्र को देखते हुए डॉ. कार्तिक उरांव ने इसका विरोध किया तथा मतांतरण कर चुके जनजातीय लोगों को जनजातीय आरक्षण से मुक्त किया जाए इस संदर्भ मे अपनी आवाज बुलंद की। जनजातीय परंतराओं के संरक्षण के पक्षधर बाबा कार्तिका उरांव की जयंती को देशभर में अभाविप के कार्यकर्ताओं द्वारा उत्साह से मनाया गया तथा उनके विचारों को स्मरण किया गया।

छात्रा कार्य

छत्तीसगढ़ प्रांत भर में कुल 68 छात्राओं ने लगभग 4500 मास्क वितरण किए ।मेहंदी रंगोली एवं पेंटिंग की ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित कराई गई जिसमें करीब 533 महिलाएं सम्मिलित हुई ।केरलप्रांत में छात्राओं के मनोनीत एवं प्रोत्साहन के लिए VIRAGO नाम सेमिनार का आयोजन किया गया लगभग सौ छात्राओं ने इसमें भाग लिया आज केरल प्रांत की हर जिला इकाई में हर तीन में एक छात्रा कार्यकर्ता है ।मध्य भारत में अभाविप द्वारा प्रवृत्ति का अभियान के निमित्त 13 जिलों में सार्वजनिक जीवन में महिला आत्मसम्मान से जुड़े मुद्दे पर अभियान चलाया गया। बिहार के खाना क्विप्पर भंगा इकाई द्वारा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में नारी सशक्तिकरण के प्रतीक संपूर्ण बिहार में स्थित एकमात्र महिला प्रौद्योगिकी संस्थान के स्वरूप को विश्वविद्यालय स्तर में तब्दील करने का कार्य किया ।गुजरात में छात्रा कार्य सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें 26 जिले और 5544 छात्राओं ने भाग लिया ।अभाविप दक्षिण बंगाल प्रांत द्वारा वुमन इन सिक्योरिटीज इन बेंगल इस विषय को लेकर रन फॉर सेफ्टी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अभाविप की छात्रा कार्यकर्ताओं के द्वारा ऋतुमति अभियान के माध्यम से महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जा रहा है ।दिल्लीप्रांत की छात्राओं द्वारा मासिक धर्म जागरूकता हेतु ऋतुमति अभियान के जरिये महिलाओं से बातचीत कर चर्चा एवं संगोष्ठी के माध्यम से मासिक धर्म से संबंधित मिथक के बारे में बताया गया ।दक्षिण बंगाल में 19 नवंबर 2020 के दिन प्रांत के 4 जिलों में करीब 300 छात्राओं को 1500 के करीब सेनेटरी नैपकिन वितरण किए। उड़ीसा में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 8 जगहों पर कुल मिलाकर 615 छात्राएं लाभान्वित हुई। उत्तरांचल प्रांत में कोरोना काल में तालाबंदी के समय छात्रा छात्रावासों में सेनेटरी नैपकिन पैड वितरण किया गया, जिससे सैंकड़ों छात्राएं लाभान्वित हुई। मिशन साहसी के जरिये अभाविप द्वारा छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाये जाते हैं। मिशन साहसी के तहत गोरक्ष प्रांत के लगभग सभी जिलों में 11 से 17 दिसंबर तक मिशन साहसी छात्राओं का प्रशिक्षण हुआ, प्रशिक्षण के उपरांत मेघा डेमोंसट्रेशन का प्रोग्राम संपन्न हुआ। दक्षिण बंगाल प्रांत में बनगांव इकाई द्वारा नारी सशक्तिकरणअभियान चलाया गया। छत्तीसगढ़ प्रांत में मिशन साहसी का आयोजन किया गया जिसमें 916 छात्रा उपस्थित रही ।मालवा प्रांत में कई जिलों में 1 मार्च से 7 मार्च के तक प्रति दिन 2 घंटे शस्त्र विद्या, तलवारबाजी, नुक्कड़ नाटक जैसे विभिन्न प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। मणिपुरप्रांत के 2 जिलों में बिशनुपुर एवं कन गोपी में नारी सशक्तिकरण हेतु मिशन साहसी कार्यक्रम आयोजित किया गया। ■

सेवा, संस्कार एवं देशभक्ति का संगम अमर बलिदानी कैप्टन रमन बक्शी प्रदर्शनी

23 दिसम्बर को अधिवेशन स्थल पर 1965 युद्ध में वीरगति प्राप्त कैप्टेन रमन बक्शी के नाम से बनाई गई प्रदर्शनी का उदघाटन हुआ जिसमें अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ शिव प्रकाश कोष्ठा, विशेष ओलम्पिक की अध्यक्षा डॉ मल्लिका बैनर्जी नड्डा व विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो श्रीमती मनु कटारिया अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस प्रदर्शनी के शुभारम्भ में महानगर के आम जनमानस भी उपस्थित हुए व एक ही स्थान पर सम्पूर्ण भारत की संस्कृति को संजोए इस प्रदर्शनी का भ्रमण किया।

प्रदर्शनी में स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख, कोरोना काल में अभाविप का कार्य,संविधान सभा की चर्चाएं आदि को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त अभाविप की देश भर की गतिविधियां, आयामों एवं कार्यों का प्रदर्शनी में उल्लेख किया गया था। प्रदर्शनी में एक आदर्श ग्राम का मॉडल भी देखा जा सकता है। वहीं बांस से बनी कलाकृतियां भी खास है। देश की वीरांगनाओं का जीवन परिचय भी प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

प्रदर्शनी उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि वैज्ञानिक शिव प्रसाद कोष्ठा ने कहा कि समाज के जो निर्धन बच्चे हैं उनको तकनीक और शोध जैसी विशिष्ट शिक्षा दिलाने में सबको आगे आना चाहिए'तभी हम गरीब और अमीर के बीच का भेदभाव मिटा पाएंगे और देश के हर वर्ग के युवाओं को आगे बढ़ा पायेंगे।

वहीं अभाविप की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा मनु कटारिया ने कहा कि " युवाओं के महासंगम का भव्य शुभारम्भ 24 दिसंबर की शाम से होगा। आज केंद्रीय कार्यसमिति ने सभी विषयों पर चर्चा की एवं अधिवेशन की रूप रेखा भी तय की। वीरगति प्राप्त रमन बक्शी को समर्पित प्रदर्शनी अभाविप के देश भर के कार्य का सुंदर उल्लेख कर रही है। मैं जबलपुर महानगर के नागरिकों को प्रदर्शनी को देखने के लिए आमंत्रित करती हूं।

कार्यक्रम में उपस्थित मल्लिका बनर्जी नड्डा जी ने कहा "जिन विषयों को लेकर के हम विद्यार्थी परिषद् में नारा लगाते थे वे अब साकार होते दीखते है। चाहे धारा 370 हो या राम मंदिर निर्माण।भारत प्रगतिशील रास्ते पर अग्रसर है।

कैप्टन रमन बक्शी

जबलपुर की माटी में जन्मे कैप्टन रमन बक्शी 11 वीं जेक राइफल्स में कमीसंड अधिकारी के रूप में भर्ती हुए थे। वह एक उत्कृष्ट क्रिकेटर और जबलपुर के एक उत्साही एनसीसी कैडेट के रूप में भी पहचान रखते थे। सेना में देश की सेवा करते हुए कैप्टन रमन बक्शी ने अनेक बार अपने शौर्य का परिचय दिया था। विलक्षण साहस के धनी रमन बक्शी 22 सितंबर 1965 को भारत-पाकिस्तान युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। जबलपुर के नगरवासियों ने उनकी स्मृतियों को चिरस्थायी बना कर रखा है, यही कारण है अभाविप के 67 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के प्रदर्शनी का नाम कैप्टन रमन बक्शी रखा गया।

प्रदर्शनी में ख़ास

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 67 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में कैप्टन रमण बख्शी के नाम पर विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं द्वारा सुंदर आकर्षण पूर्ण जानकारी वाली प्रदर्शनी सजाई गई है। कैप्टन रमन बक्शी की प्रदर्शनी मुख्य द्वार से बाएं तरफ स्थित है। प्रदर्शनी को मुख्यता चार भागों में विभाजित किया गया है प्रथम भाग में जबलपुर के पन्नों से प्रारंभ किया गया है, जिसमें जबलपुर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कार्य का प्रारंभ किस प्रकार किया गया और इसकी प्रथम कार्यकारिणी कैसे घटित हुई यह विवरण है, प्रदर्शनी के दूसरे भाग परिषद की संरचना एवं कार्यों को उकेरा गया है इसके अलावा कोरोना जैसी महामारी में परिषद ने समाज के बीच किस प्रकार अपने सामाजिक कार्यों का दायित्व का निर्वहन किया इसका भी उल्लेख किया गया है ।

प्रदर्शनी में उभरते हुए भारत का भी चित्रांकन किया गया है। उभरते हुए भारत को समझाने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में बांटा गया है और किस प्रकार से उभरते हुए भारत में विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन आ रहा है व 21वीं सदी में भारत की क्या भूमिका है इसका सम्पूर्ण विवरण है। इसके बाद स्वाधीनता के अमृत महोत्सव का उल्लेख किया गया है इसमें यह बताया गया है कि संविधान किस प्रकार गठित किया गया है व भारत का संविधान विश्व मे सबसे श्रेष्ठ कैसे है । इसी के तहत यह भी बताया गया है कि स्वतंत्रता आंदोलन में हमारी वीरांगनाओं ने किस प्रकार से अपना योगदान दिया प्रदर्शनी में ऐसी वीरांगनाओं के बारे में बताया गया है जिनका इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं मिलता है, इसके बाद सभी प्रकार के आयाम कार्यों का उल्लेख किया गया है प्रदर्शनी में उन महानुभावों का उल्लेख भी किया गया है जिन्हें इस वर्ष पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया है ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता है जो समाज में रहकर समाज के लिए कार्य करते हैं किंतु समाज में कहीं उनका जिक्र नहीं होता है। इसके अलावा प्रदर्शनी में जनजाति समुदाय की कला एवं उनके द्वारा उपयोग होने वाली वस्तुओं का उल्लेख भी किया गया। प्रदर्शनी में देश भर की मीडिया की नज़र को स्थान दिया गया है जो कि यह बताता है कि विद्यार्थी परिषद किस प्रकार काम करता है और किस तरह राष्ट्र के पुनः निर्माण में कार्यरत है। ■

संस्कारधानी की धरा पर दिखी भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 67वे राष्ट्रीय अधिवेशन में दूसरे दिन भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर से आए विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि अपनी सांस्कृतिक वेशभूषा में उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए। शोभा यात्रा में नेपाल, बांग्लादेश से आए प्रतिनिधि एवं विदेशों में पढ़ने वाले छात्र भी शामिल हुए। ऋषि जाबाली की पुण्यभूमि भारत माता की जय, वंदे मातरम, विद्यार्थी परिषद जिंदाबाद के नारों से गूंज उठा। कार्यकर्ताओं का उत्साह और नगरवासियों की स्वागत भावना को देखकर लग रहा था मानों स्वर्गलोक इस धरा पर उतर आया है। भव्य शोभा यात्रा में गूंज रहे देशभक्ति गीतों और नारों से रोम-रोम पुल्कित हो उठा।

जबलपुर महानगरवासियों ने बड़े ही उल्लास के साथ अपने घरों से पुष्पवर्षा करते हुए सभी प्रतिनिधियों का स्वागत कर उत्साहवर्धन किया। शोभा यात्रा में आगे सफ़ेद वस्त्रों में हाथ में ध्वज लिए 60 प्रतिभागी चल रहे थे। शोभायात्रा शहर के मध्य क्षेत्र से प्रारम्भ हुई और दमोहनाका स्थित हितकारिणी विद्यालय के परिसर से प्रारम्भ होकर मिलौनिगंज, कोतवाली, बड़ा फुहारा, मालवीय चौक, तीन पत्ती होते हुए सिविक सेंटर में खुले अधिवेशन के मंच पर समाप्त हुई। शोभायात्रा मार्ग पर यात्रा का धार्मिक, सामाजिक, पूर्व कार्यकर्ता, अनेक महाविद्यालय के छात्र-छात्रा एवं व्यापारीगणों द्वारा 70 से अधिक स्थानों पर भव्य स्वागत किया गया।

सभी प्रांतो से आये हुए प्रतिनिधियों ने अपने क्षेत्रीय संरचना के आधार पर शोभा यात्रा में सहभागिता की। इन क्षेत्रों में मध्य, दक्षिण, दक्षिण मध्य, पश्चिम, पूर्व, उत्तर पूर्व, मध्य पूर्व, पूर्वी उत्तरप्रदेश, पश्चिम उत्तर प्रदेश, उत्तर पश्चिम क्षेत्र शामिल है। छात्र प्रतिनिधियों ने जोश व अनुशासन का परिचय देते हुए अपने प्रांतो का नेतृत्व किया। शोभायात्रा में मुख्य रूप से अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. छगनभाई पटेल, राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी, सभी राष्ट्रीय मंत्री एवं सभी केंद्रीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। ■

खुले अधिवेशन में अभाविप ने भरी भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण की हुंकार

जबलपुर। राष्ट्रीय अधिवेशन के दूसरे दिन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा सिविक सेंटर क्षेत्र में खुला अधिवेशन आयोजित किया गया।देश भर से आये सात सौ से भी अधिक कार्यकर्ता शोभा यात्रा के साथ अधिवेशन स्थल से सिविक सेंटर तक पहुंचे। समापन स्थल पर विराट खुला अधिवेशन हुआ जिसमें देश भर से आये सभी प्रतिनिधि अपने क्षेत्रों की संरचना के अनुसार शामिल हुए, साथ ही इसमें पूरे शहर से आये जनमानस भी सम्मिलित हुआ। हज़ारों की संख्या के साथ यह खुला अधिवेशन सम्पन्न हुआ, इस दौरान मंच पर राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो छगनभाई पटेल, राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी, राष्ट्रीय मंत्री गजेंद्र तोमर, राष्ट्रीय मंत्री हर्षा नारायण, दिल्ली छात्रसंघ अध्यक्ष अक्षित दहिया, काशी प्रान्त मंत्री साक्षी सिंह, महाकौशल प्रान्त मंत्री सुमन यादव, जयपुर प्रान्त मंत्री होशियार मीणा मंचासीन रहे। इन सभी ने इस खुले अधिवेशन को सम्बोधित किया ।

खुले अधिवेशन के मंच से वक्ताओं ने शिक्षा के भारतीयकरण और भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण को लेकर हुंकार भरी। सेवा कार्यों और देश की आवश्यकता के अनुरूप कार्य करते हुए अभाविप आज समाज की आस्था का केंद्र बन गया है।अभाविप की राष्ट्रीय महामंत्री ने समस्त सभा में जोश भरते हुए कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए विद्यार्थी परिषद प्रयासरत है। हमारी शिक्षा पद्धति इस देश की मानसिकता को नकारात्मक बनाने वाली है जिसे आज बदल कर शिक्षा का भारतीयकरण करने की आवश्यकता

है। उन्होंने कहा कि तथाकथित इतिहासकार सिंकदर को विश्व विजेता बताते हैं मैं उनसे पूछना चाहती हूं पोरस से पराजित सिंकदर विश्व विजेता कैसे हो सकता है? औरंगजेब को महान बताने वाले इतिहासकार बतायें कि मंदिरों का विध्वंसक महान कैसे बन सकता है ? आज भारत में भाषा के आधार पर विभाजित करने का प्रयास किया जा रहा है वहीं विद्यार्थी परिषद देश भर में कश्मीर हो या कन्याकुमारी भारत माता एक हमारी के उद्घोष के साथ एकता का संदेश देती है। आज विद्यार्थी परिषद समाज के आशा का केंद्र बन गया है और विद्यार्थी परिषद देश में सभी भेद भाव को समाप्त करने के लिए निरंतर कार्य करती रहेगी। मैं जबलपुर के लोगों को आश्वासन देती हूं कि ज्ञान शील और एकता की राह पर चलते हुए अभाविप आपकी आशाओं को पूर्ण करेगी। सुश्री त्रिपाठी ने कहा कि आध्यात्मिक दृष्टि मजबूत होकर ही भारत विश्व गुरु बन सकता है। भारत माता पुनः अपने सिंहासन पर आरूढ़ हो यही हमारा लक्ष्य है।

मंदिरों का विध्वंसक महान कैसे – निधि त्रिपाठी

अभाविप महामंत्री निधि त्रिपाठी ने इतिहासकारों को कटघरे में खड़ा करते हुए कहा कि तथाकथित इतिहासकार सिंकदर को विश्व विजेता बताते हैं मैं उनसे पूछना चाहती हूं पोरस से पराजित सिंकदर विश्व विजेता कैसे हो सकता है ? औरंगजेब को महान बताने वाले इतिहासकार बतायें कि मंदिरों का विध्वंसक महान कैसे बन सकता है ?

रानी दुर्गावती ने मातृभूमि की रक्षा के लिए संपूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया – सुमन यादव

महाकोशल प्रांत की मंत्री सुमन यादव ने कहा कि मैं मंच से यहां उपस्थित युवा शक्ति को प्रणाम करती हूं।यह भूमि ऋषि जाबाली की तपो भूमि है, यह भूमि रानी दुर्गावती की कर्मभूमि है, यह भूमि राजा शंकरशाह जैसे महान योद्धाओं की भूमि है। यह भूमि जनजातीय वीरो की ऋणी है, जिन्होंने इस भूमि की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। ऐसे शूरवीरो के वास्तविक इतिहास से हमें दूर रखकर झूठा इतिहास पढाया गया। इसी गलती को सही करने के लिए अभाविप ने इन वीरो के सम्मान के लिए आगे आने का संकल्प लिया जिसका सबसे पहला उदाहरण छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम बदल कर राजा शंकरशाह के नाम पर करना है ।

नेतृत्व निर्माण का केन्द्र है अभाविप – अक्षित दहिया

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष अक्षित दहिया ने अपने संबोधन में कहा कि'छात्रशक्ति – राष्ट्रशक्ति' केवल नारा नहीं परिषद की प्रतिबद्धता है। महाविदयालय अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए संस्कार का केन्द्र है। अभाविप छात्रों में नेतृत्व क्षमता का विकास करती है। शैक्षिक परिसर के दिल की धड़कने अगर बढ़ती है तो भारत विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर होगा। अभाविप का मानना है कि अगर देश को बदलना है तो युवाओं को बदलना होगा। अभाविप ने भ्रष्टाचार और बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ आंदोलन किये। आपातकाल के खिलाफ अभाविप के नेतृत्व में ही संपूर्ण क्रांति का शंखनाद हुआ था।

नारी को आत्मनिर्भर बनाना अभाविप का लक्ष्य – साक्षी सिंह

काशी प्रांत की मंत्री साक्षी सिंह ने कहा कि महिलाओं को शिक्षा के द्वारा ही आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। शिक्षित महिला ही समाज को सही दिशा दे सकती है। परिषद सभी को राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित करती है और नारी को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सतत प्रयासरत है।

अपने कुकृत्यों के लिए माफी मांगे ब्रिटिश सरकार – होशियार सिंह मीणा

जयपुर प्रांत के मंत्री होशियार सिंह मीणा ने कहा कि देश पर अनेकों

आक्रांताओं ने हमले किये लेकिन हमारी संस्कृति को नहीं मिटा पाये। जल, जंगल, जमीन और राष्ट्र को बचाने के लिए जनजातीय समाज में सर्वोच्च बलिदान दिये। मानगढ़ नरसंहार को याद करते हुए उन्होंने कहा कि ब्रिटिश सरकार का इतिहास क्रूरतम है, हजारों देशभक्त स्वतंत्रता सेनानियों को मौत के घाट उतारने वाली ब्रिटिश सरकार को माफी मांगना चाहिए। भारत सरकार ने 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस की घोषणा कर जनजातीय बलिदानियों को सम्मान दिया है।

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रचयिता प्रभु श्रीराम – हर्षा नारायण

अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री हर्षा नारायण ने कहा मैं दक्षिण कर्नाटक का हूं। हमारी भाषा भले ही अलग-अलग हो लेकिन हमारी भावनाएं एक है। भारत ने विश्व को ज्ञान-विज्ञान और आध्यात्म की शिक्षा दी। हमारे यहां नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्व के श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान थे। अयोध्या में बन रहे भगवान राम का मंदिर केवल धर्म स्थल ही नहीं बल्कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक रहने वाले भारतीयों की भावनाओं का भी केन्द्र है। प्रभु श्रीराम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रचयिता हैं। हमारा देश बदल रहा है पहले लोग ताजमहल जाकर फोटो खिंचवाते थे आज काशी विश्वनाथ धाम में जाकर सेल्फी ले रहे हैं।

राष्ट्र प्रथम की भावना से कार्य करती है अभाविप – गजेन्द्र तोमर

राष्ट्रीय मंत्री गजेन्द्र तोमर ने परिषद के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि अभाविप विविध आयामों के जरिये राष्ट्र प्रथम की भावना से कार्य करती है। कश्मीर में धारा 370 हटाने के लिए लंबी लड़ाई लड़ी। एक समय में परिषद का नारा था – भारत माता के सीने पर खंजर – धारा 370 धारा 370 । केरल में जब राष्ट्रीय विचार के लोगों का गला घोंटा जाने लगा तो अभाविप ने चलो केरला रैली का आयोजन कर लोकतंत्र बचाने का आह्वान किया। ■

दिव्यांगजनों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाना, मेरे जीवन का लक्ष्यः कार्तिकेयन गणेशन

विल्लुपुरम (तमिलनाडु) के मूल निवासी कार्तिकेयन गणेशन 15 साल अनाथालय में रहे। अनाथालय में काम करते हुए उन्हें ज्ञात हुआ कि भारत में बौद्धिक और विकासात्मक दिव्यांग जनों की संख्या 16 लाख है जिनमें से लगभग 75 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। कम रोजगार दर और उच्च जीवन व्यय के साथ, वे भारत के सबसे गरीब समूहों में से एक हैं। इस दयनीय स्थिति को बदलने का संकल्प श्री कार्तिकेयन ने लिया और सृष्टि फाउंडेशन की शुरूआत की । बौद्धिक और विकासात्मक दिव्यांगजनों व समाज के वंचितों की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले कार्तिकेय गणेशन को जबलपुर में संपन्न अभाविप के 67 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रतिष्ठित प्रा० यशवंतराव केलकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। युवा पुरस्कार से सम्मानित कार्तिकेयन ने अपने कार्य, संघर्ष, आगामी योजना इत्यादि के बारे में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के स. संपादक 'अजीत कुमार सिंह' से विस्तृत बात की है। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश –

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार 2021 से सम्मानित होने के बाद आप कैसा महसूस कर रहे हैं?

जब प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार 2021 के लिए मेरे नाम की घोषणा हुई तो मैं सर्वप्रथम आश्चर्य और स्तब्धता से भर गया क्योंकि मैं न तो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ा हुआ हूं और न ही विद्यार्थी परिषद के लोगों को जानता हूं। यह पुरस्कार मुझे क्यों दिया गया, मैं जहां से आता हूं वहां कोई सुविधाएं नहीं हैं पर अभाविप मुझे ढूंढने में सफल हुआ। विद्यार्थी परिषद का बहुत-बहुत आभार जिन्होंने मुझे ढूंढ निकाला। मैं 15 वर्षों तक अनाथालय में रहा और अब उसी अनाथालय का निदेशक हूं। मेरे जीवन का उद्देशय दिव्यांगजन के लिए काम करने का है और यह पुरस्कार मुझे अपने कार्य को और बेहतर करने के लिए प्रेरित करेगा।

अपने कार्यों के बारे में बताएं

ज्यादातर लोग दिव्यांगजनों से सहानुभूति रखते हैं, जबकि मेरा मानना है कि दिव्यांगजनों को सहानुभूति नहीं सहयोग की जरूरत है। दिव्यांगजन के पास कौशल है, हुनर है, वे कुछ करना चाहते हैं, स्वावलंबी बनना चाहते हैं लेकिन उन्हें समुचित मंच नहीं मिल पाया है। अगर आप उन्हें सही तरीके से प्रशिक्षित करेंगे तो निश्चित रूप से आत्मनिर्भर होगें। समाज और देश के विकास में महत्ती भूमिका का निर्वहन कर सकेगें। अनाथालय में काम करते हुए मुझे पता चला कि भारत में बौद्धिक और विकासात्मक दिव्यांग जनों की संख्या 16 लाख है (जनगणना 2011) जिनमें से लगभग 75% ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। कम रोजगार दर और उच्च जीवन व्यय के साथ, वे भारत के सबसे गरीब समूहों में से एक हैं। इस दयनीय स्थिति को बदलने का मैंने संकल्प लिया और सृष्टि फाउंडेशन की शुरूआत की। वर्ष 2013 में सृष्टि विलेज फाउंडेशन बनाने के लिए 10 एकड़ जमीन खरीदी। उस समय, भूमि अनुपजाऊ और बंजर थी। तब से, समुदाय के सदस्यों के अथक परिश्रम से वर्तमान समय में उपजाऊ भूमि में बदल दिया गया है जो विविध क्षमताओं वाले लोगों द्वारा प्रबंधित कई पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं का केंद्र है। जो अब सृष्टि गांव कहा जाने लगा है। सृष्टि फाउंडेशन तीन अग्रणी परियोजनाएं चलाता हैः सृष्टि गांव, सृष्टिविशेष विद्यालय और सृष्टि फार्म अकादमी। इसके साथ कई सामुदायिक समर्थन और पर्यावरण परियोजनाओं को भी सृष्टि द्वारा संचालित किया जाता है। सृष्टि ग्राम समुदाय मॉडल के माध्यम से, बौद्धिक और विकासात्मक दिव्यांग जन वयस्क स्वतंत्र जीवन कौशल और

Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad

67th NATIONAL CONFERENCE (National Executive Council)

December 24, 2021 Jabalpur (Mahakoshal Prant)

RESOLUTION NO. – 1

TRIBAL PRIDE DAY CELEBRATION IS HONORING THE DEDICATION OF TRIBAL SOCIETY

In this 75th year of independence, the National Executive Council of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad welcomes the announcement of the Indian Government to celebrate the birth anniversary of BhagwanBirsaMunda as "Tribal Pride Day" across the country.

Countless tribal freedomfighters sacrificed their lives in India's freedom struggle and fought for the country, but these heroes have not got a place in history till date.It is pride and honor for the entire tribal society to celebrate the tribal pride day by which the glorious history and struggle of the entire tribal society will be brought into limelight of the society .

ABVP has been working continuously to connect the entire society with the glorious tradition of the tribal community which has been preserving The ethos of Sanatan Dharma and culture. Realizing the importance of the glorious history of the tribes, ABVP has been celebrating 15th of November as Tribal Pride Day.

The decision of the union Government of India to celebrate tribal pride day on the occasion of BirsaMundaJayanti has manifested that entire nation has recognised and appreciated the contribution of DhartiAbaaBirsaMunda and many other tribal heroes and warriors .

This National Executive Council of ABVP appeals the youths of India to share the traditional knowledge of the tribal Community who have been maintaining a constant balance between climate and environment, their contribution in the freedom struggle, women's participation in social activities, folk art, folk music and folk culture likewise contribution to the society is immense which has to be remembered and notable at the national level. ■

नौकरी कौशल को अनुभवात्मक तरीके से सीखते हैं। यह उन्हें मुख्यधारा के समाज में एक स्वतंत्र जीवन जीने में मदद करता है।

विद्यार्थी परिषद के बारे में आपकी क्या राय है?

सच पूछिये तो अधिवेशन में आने के पहले मुझे विद्यार्थी परिषद के बारें में कोई विशेष जानकारी नहीं थी। युवा पुरस्कार की घोषणा होने के बाद इंटरनेट, सोशल मीडिया इत्यादि के माध्यम से अभाविप के बारे में जानकारी इकट्ठा करने लगा। यहां आने के पूर्व मुझे लगा था कोई प्रोफेशनल आयोजन होगा, हाईप्रोफाइल लोग होंगे। एसी लगे हॉल में ग्लेमरस कॉन्फ्रेस होगा लेकिन जब मैं यहां आया तो मन में उत्पन्न हुए सारे भ्रम टूट गये। परिषद कार्यकर्ता के आपसी सौहार्दपूर्ण, सहयोगात्मक व्यवहार देखकर मैं अभिभूत हूं। अलग-अलग राज्य से आये विविध भाषा के होने के बावजूद लोग एक-दूसरे से इस अंदाज में बातचीत कर रहे हैं जैसे मानों किसी परिवार के सदस्य हैं। पहले मुझे लगा कि यहां कोई परंपरागत आयोजन होने वाला है लेकिन यहां आने के बाद पता चला कि विद्यार्थी परिषद में शोध, चिकित्सा, सुरक्षा, स्वालंबन, शिक्षा इत्यादि के साथ देश को आगे ले जाने की बात हो रही है। यहां पर आये कार्यकर्ताओं में कोई स्वार्थ नहीं है वे सब निःस्वार्थ भाव से लगे हुए हैं। व्यक्तिगत हित से ऊपर उठकर बातें की जा रही है। यह अनुभव मेरे लिए अनोखा था, प्रदर्शनी में लगे सेवा कार्यों की तस्वीर को देखकर सुखद अनुभूति हुई। अधिवेशन में मुझे लघु भारत का दर्शन हुआ। खुद को अब मैं परिषद के कार्यों से जुड़ा हुआ महसूस कर रहा हूं। ■

स्वाधीनता 75 : राष्ट्रीयत्व एवं स्वावलंबन का उद्घोष

।श्रीनिवास।

अधिवेशन के दूसरे दिन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास ने 'स्वाधीनता 75 : राष्ट्रीयत्व एवं स्वावलंबन का उद्घोष' विषय पर अपने संबोधन में कहा कि इस अधिवेशन के जिस सभागार में हम हैं, यह सभागार ऐसे व्यक्ति के नाम पर है जिसका संपूर्ण जीवन भारत देश की रक्षा के लिए समर्पित रहा। दुर्घटना में बलिदान हो गए पूर्व सीडीएस जनरल बिपिन रावत की आवाज आज भी हमारे कानों में गूंजती है। वो कहा करते थे कि हम अपने दुश्मन पर पहले गोली नहीं चलाते लेकिन बाद में हम कितनी चलाते हैं, उसे गिनते भी नहीं है। इसलिए देश के लिए जीवन त्याग करने वाले सभी शहीदों सहित भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को मैं नमन करता हूं। इस अवसर पर राष्ट्रकवि दिनकर की पंक्ति मुझे स्मरण हो रही हैं -

तुमने दिया राष्ट्र को जीवन् राष्ट्र तुम्हें क्या देगा,
अपनी आग तेज रखने को नाम तुम्हारा लेगा।

आज हम स्वाधीनता का 75 वां वर्ष मना रहे हैं तो निश्चित रूप से भारत के स्वाधीनता के 100 वर्ष तक के भारत का चित्र हमारे मन व मस्तिष्क में होना आवश्यक है। इस समय हमें भारत के लिए क्या करना है यह सोचने की आवश्यकता है।

"वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो चट्टानों की छाती से दूध निकालो। है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो, पियूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।।"

जब भारत के बारे में जीने का हम सोचते हैं, भारत को जीना प्रारंभ करते हैं तो हम भारत के बनते हैं और भारत को बनाते हैं। इस संपूर्ण भावना के साथ भारत के चित्र को, भारत के विचार को समझना आवश्यक है। इसलिए यह समझना भी आवश्यक है कि दुनिया के राष्ट्र भारत के राष्ट्र की संकल्पना से भिन्न है। साथ ही यह भी समझना आवश्यक है कि भारत के संपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम को हम देखते हैं तथा भारत के लोगों का देश की रक्षा के लिए उनके योगदान को देखते हैं तो इसके मूल में क्या बात है तो हमें अथर्ववेद में लिखी गई ये पंक्तियां याद आती हैं -

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

भारत को भारत बनाए रखने के लिए जिस भी प्रकार का योगदान व बलिदान हम भारतवासियों को देना पड़ा है, हम दिए हैं और आगे भी देते रहेंगे लेकिन यह बात समझना आवश्यक है कि यह कमिटमेंट आखिर आता कहां से है।

चूंकि भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण पृथ्वी के साथ हमारा संबंध शास्त्रों ने बनाया है। हमारे शास्त्रों व हमारे पूर्वजों द्वारा जो संस्कार हमें दिए गए हैं, वह संपूर्ण सृष्टि, संपूर्ण मानव जाति व मानवता के लिए है। हम पृथ्वी के पुत्र समान है अर्थात पुत्र के रूप में हम संपूर्ण सृष्टि को देखते हैं और तभी हमारे शास्त्रों में कहा गया है..

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया

सभी को सुखी रखने का विचार यदि कोई कर सकता है तो वह भारतवासी ही कर सकता है। अन्य कहीं किसी भी धर्म, मत, संप्रदाय, समूह से ऐसा विचार नहीं आया। भारत के लिए धर्म जीवन जीने की पद्धति है। किसी भी चीज को देखने की दृष्टि भी हमारे शास्त्रों ने दी है। विश्व, पृथ्वी, पहाड़, जल, पर्यावरण, जन, महिला हो या कुछ भी सभी को देखने की दृष्टि हमारे धर्म से निकल कर आती है। हम सभी की पूजा करते हैं क्योंकि सभी हमारे इस जीवन के अंग हैं। किसी एक के बिना हमारा जीवन नहीं चल सकता। यह सनातन संस्कृति ही संपूर्ण सृष्टि के शांति का संदेश देती है, जिसे हम भारतीय आत्मसात करते हैं। दुनिया में देश बनते हैं और बिगड़ते हैं किंतु भारत राष्ट्र के बारे में हमारी संकल्पना भिन्न है। दुनिया में भाषा के आधार पर देश बने। 50 राज्य आपस में लड़ते हैं एक कॉमन पॉइंट पर सहमति के साथ इकट्ठे होते हैं तो यूएसए बन जाता है। 23 देश मिलकर यूके बना लेते हैं। यह देश भौगोलिक संरचना के आधार पर बनने वाले देश हैं और जब यह अंडरस्टैंडिंग टूटती है तो यूएसएसआर 15 देशों में बंट जाता है। भारत के साथ ऐसा नहीं है भारत का विचार तो शाश्वत है, सार्वभौमिक है। भारत व भारतीयता की पहचान तो इन पंक्तियों से की जाती है -

उत्तरं यत समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं,
वर्षं तद भारतं नाम भारती यत्र संततिः ।।

ऐसे भूभाग में जीने वाले लोग भारतीय हैं। हमारा इतिहास सौ- दो सौ वर्षों का नहीं है। हमारे देश पर कितने ही आक्रमण हुए लेकिन हमारा भारत नहीं मिटा और इस बारे में यह कहा भी जाता है कि

यूनान, मिस्र, रोमां, सब मिट गए जहाँ से।
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।।

आखिर वह बात क्या है कि हमारी हस्ती नहीं मिटती है तो हमें दिखाई पड़ता है कि हमारी सनातन संस्कृति हमारी ताकत है जो हमारी शक्ति को नहीं मिटने दिया। विवेकानंद जी ने भी कहा है कि आने वाले समय में यदि हम भारत को बदलना चाहते हैं तो हमें सभी देवी देवताओं का पूजा छोड़कर भारत राष्ट्र अर्थात भारत माता की पूजा करनी चाहिए। हम सभी राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए जीने वाले लोग हैं। 75 वर्ष पहले हमने इसी संकल्प के साथ ऐसे एक विद्यार्थी संगठन की स्थापना की, जो आज यह 75 वर्ष की यात्रा करते हुए देश की आजादी के 75वें वर्ष में चिंतन कर रहा है कि 100 वर्ष का स्वाधीन भारत कैसा होगा। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हम राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के संकल्प के साथ काम करने वाले संगठन विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता हैं और इस संकल्प का साक्षातकार करने के लिए हम यहां इस राष्ट्रीय अधिवेशन में आए हैं।

आज भारत की न्यायपालिका, कार्यपालिका एक से एक जटिल मसलों का हल निकाल रही है। संवैधानिक अस्मिता के लिए संकट पैदा कर रहे धारा 370 को इसी शासन, प्रशासन और न्यायपालिका ने मिलकर हल कर दिया और धारा 370 और 35 A को समाप्त किया। राष्ट्र की एकता, अखंडता व अस्मिता का सपना जो बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने देखा था उसे साकार करने का काम आज हो रहा है। भारत की ऐतिहासिक सभ्यता, राष्ट्रीय व सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक भगवान श्री राम के जन्मभूमि के वर्षों के विवाद को समाप्त करते हुए आज भव्य मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा है। यह भी निर्णय भारत ने सहजता से सहर्ष स्वीकार किया। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे आंखों के सामने यह कार्य हो रहा है। इस देश में इतने सहज भाव ऐसे बड़े निर्णय भी लिए जाएंगे, हमने यह सोचा भी नही था। इसके साक्षी हम हैं।

हम कुंभ को देखते हैं जो भारत की सनातन परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है। जहां एकमहीने तक विश्व भर से प्रत्येक जाति, रंग, वेशभूषा, मत, पंथ, संप्रदाय के लोग आकर गंगा मईया में डुबकी लगाते हैं। प्राचीन काल से बहाल आ रहे इस परंपरा में सामाजिक समरसता का संदेश स्पष्ट दिखता है। साथ ही इसके माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं को लेकर चिंतन कर उसे हल करने की परंपरा भारत में रही है। बिहार में उगते व डूबते सूरज को अर्घ देने की परंपरा है जो आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित हो रहा है।

विगत 5 अगस्त 2019 को हमने भारत के प्रधानमंत्री को अयोध्या में श्रीराम जी को प्रणाम करते हुए देखा है। रामलला के सामने दंडवत होना, राज्य का राष्ट्र के सामने दंडवत होना है। आज भारत का आर्थिक क्षेत्र देखें या रक्षा क्षेत्र या कोई भी क्षेत्र देखें, प्रत्येक क्षेत्र में भारत आज विश्व के सामने अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है। आज सर्जिकल स्ट्राइक जैसा काम भी भारत की सेना कर रही है। कोरोना जैसे भयावह दौर

में भी इस संकट से निपटने में विश्व में भारत का नेतृत्व हमने देखा है। इससे लड़ने के लिए टीका भी भारत ने बनाया और विश्व के कई देशों को उसी जटिल समय में टीका उपलब्ध भी कराया, यह नया भारत है। आजादी के बाद से ही हम कन्या भ्रूण हत्या जैसे कुकृत्यों से हम लड़ रहे थे किंतु आज भारत में 1000 पर 1020 बेटियों का अनुपात भारतीय शक्ति को प्रदर्शित कर रहा है। यह सारी बातें एक दिन में नहीं हुई हैं। निश्चित रूप से एक लंबा कालखंड इस परिवर्तन को देखने में तथा लंबा संघर्ष इस परिवर्तन को लाने में लगा है।

आज हम देखते हैं विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों व विद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रमों को पढ़ाया जाता है जिससे युवा दिग्भ्रमित होते हैं। वास्तव में महान कौन है और हम किसे अपने पाठ्यक्रम में पढ़ रहे होते हैं। आज उसके भी बदलने का समय आ गया है। हमें समझना होगा कि 14 वर्षों के वनवास के बाद श्री राम, भगवान पुरुषोत्तम राम बन जाते हैं। हमें उन्हें पढ़ना होगा तथा आज के विद्यार्थियों को पढ़ाना होगा। एक समय में भारत विश्वगुरु था। यहां तक्षशिला, नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे, जो ज्ञान के केंद्र के साथ-साथ भारत की संस्कृति को विश्व में ले जाने वाले केंद्र के रूप में स्थापित थे। भारत का वैभव सभी के जीवन स्तर को उठाने वाला था।

कालचक्र की गति से हमारा सिंहासन टूटा। 800 ई. पूर्व जो भारत पर आक्रमण प्रारंभ हुए तो लगातार चलते रहे। हमारे अंदर राष्ट्रीय तत्व था तभी कभी हम पर पराधीनता को स्वीकार नहीं किए। हमारे पूर्वज उनसे निरंतर लोहा लेते रहे। इस्लामिक आक्रांताओं का एक ही सपना था, भारत को पूर्ण रूप से गुलाम बना लिया जाए किंतु भारतीय मनीषियों ने, ऋषि-मुनियों ने इसे सफल नहीं होने दिया। हमारे देश में मुगल आए, पठान आए, शक आए अनेक आक्रमणकारी आए और अंत में अंग्रेज आए किंतु इन सब से भारत कैसे लड़ा इसे हमें समझने की आवश्यकता है। आज अफगानिस्तान मात्र 20 दिन में तालिबान के सामने हथियार डाल देता है। सत्तर हजार सैनिकों के सामने साढ़े तीन लाख सेना संघर्ष करते दिखाई पड़ती है और हम हजार- बारह सौ वर्षो तक गुलामी की लड़ाई लड़ते रहे किंतु हारे नहीं। एक से एक खूंखार आक्रमणकारी भारत पर आक्रमण किए किंतु हमारे पूर्वज कैसे थे कि हमारी संस्कृति व परंपरा को बचा कर रखें। हमें अपने पुरुषार्थ से पुनः विश्वगुरु के रूप में खड़े होकर भारत को पुनः एक महान राष्ट्र बनाना है।

हमारे देश में ऐसे कबीर, मीराबाई, रामानंद, तुलसीदास, रविदास जैसे राष्ट्रभक्त थे जिन्होंने राष्ट्र तत्व को समाप्त नहीं होने दिया। जब- जब ऐसे आक्रमणकारी आए तो कहीं पर महाराणा प्रताप खड़े हुए तो कहीं पर गुरु गोविंद सिंह तो कहीं पर हिंदवी समाज को खड़ा करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज खड़े होकर इनसे लोहा लिया तो कहीं पर अहिल्याबाई तो कहीं पर इस नगर में जहां यह अधिवेशन संपन्न हो रहा है यहां से ऐसी रानी दुर्गावती खड़ी हो गईं। यह देश मातृशक्ति का पुजारी क्यों है क्योंकि जीजाबाई जैसी महिला शक्ति के रूप में ऐसे आक्रांताओं से लोहा लिया। ऐसे ही अपने 9 वर्ष के बेटे को अपनी आंखों के सामने टुकड़े टुकड़े होते हुए देखा है देखने वाली ऐसी.....

आज भारत को ऐसे कुछ अपने ही लोगों के षड्यंत्रों का सामना करना पड़ता है। आज हम देखते हैं टूलकिट के माध्यम से भारत को तबाह करने का प्रयास किया जाता है। बाह्य शक्तियों के साथ-साथ आंतरिक शक्तियों से भी हमें लड़ना पड़ता है। हम आप विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता देशभर के शैक्षणिक परिसरों में देश विरोधी शक्तियों से लड़ने का काम कर रहे हैं। पहले हम बाहरी लोगों से लड़ते थे, आज हम अपनों से भी लड़ रहे हैं। उस समय भी ऐसे लोग थे जो लोग अपने साथ नहीं थे और आज भी ऐसे धृतराष्ट्र हैं जो देश के लिए नहीं सोचते, देश के लिए कभी खड़े नहीं हो सकते।

भारत की ऊर्जा का केंद्र केवल कर्मकांड के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए, मानवता के लिए, आत्मिक चेतना के लिए है। जब प्राचीन काल में कोई गूगल नहीं था, व्हाट्सएप नहीं था मोबाइल नहीं था फिर भी पूरी दुनिया से लोग कुंभ में आते थे और एकमाह तक विश्लेषण करते थे। समाज की समस्याओं का समाधान होता था जिसमें सभी प्रकार के मत, पंथ, संप्रदाय जाति, वेशभूषा व भाषा के लोग सम्मिलित होते थे। अपना धर्म ऐसा था। पूज्य बाबा साहब ने जब 1936 में हिंदुत्व को छोड़ने की घोषणा की तब अनेक लोगों ने उन्हें अपने धर्म में सम्मिलित होने को कहा किंतु बाबा साहब ने कहा मैं दुनिया के किसी अन्य मजहब को स्वीकार नहीं करूंगा जिसका अंत 'ब्लैक होल' है, जिसमें सुधार की गुंजाइश नहीं है। मैं जन्मा हिंदू हूं और मरने तक भारत के हिंदू धर्म से पैदा हुए किसी मत में जाऊंगा, जहां अंतिम समय तक सुधार की प्रक्रिया होती है, जहां प्रत्येक कालखंड में युगानुकूल परिवर्तन होते रहे हैं।

भारत की स्वाधीनता के लिए प्रथम क्रांति 1857 में हुई जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता का प्रथम महासमर थी। वह क्रांति भी अचानक से नहीं हुई। वह भी अनेकों प्रयासों व संघर्षों की परिणति थी, जिसमें पूर्वोत्तर के मणिराम, लक्ष्मीबाई नानासाहब, तात्या

टोपे, झलकारी बाई जैसे तमाम लोग देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्वाधीनता के लिए काम कर रहे थे व इस महासमर की तैयारी कर रहे थे। 1891 में नागालैंड में रानी गायत्री, 1857 से 40 वर्ष पूर्व पाइपों आंदोलन, उड़ीसा का 1717 में पूर्वी भारत के सन्यासियों का विद्रोह, पंजाब का कूका आंदोलन, बिरसा मुंडा का संघर्ष, जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद माइकल ओ डायर का 21 साल बाद उसी के देश में गोली मारकर बदला लेने वाले उधम सिंह को कभी नहीं भूला जा सकता। खुदीराम बोस के 19 वर्ष की उम्र में उनके बलिदान को नहीं भूला जा सकता। "मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूंगा के संकल्प के साथ मां भारती की आन-बान और शान के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले चंद्रशेखर आजाद को हम नहीं भूल सकते। अशफाक उल्ला खां को हम नहीं भूल सकते थे जिन्होंने कहा कि मेरा दुर्भाग्य है कि मैं इस्लाम में पैदा हुआ, जब भी मुझसे अल्लाह मिलेंगे तो मैं उनसे कहूंगा कि मुझे पुनः एक जन्म मिले जिससे मैं पुनः भारत के लिए बलिदान दे सकूं। मदन लाल ढींगरा को कैसे भूला जा सकता है जिन्होंने वीर सावरकर से पूछा कि बलिदान की उम्र क्या है तो उन्होंने कहा जिस दिन हम बलिदान का संकल्प ले लेते हैं उसी दिन हमारा बलिदान सुनिश्चित हो जाता है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आजाद हिंद फौज के साथ देश के स्वाधीनता हेतु उनके समर्पण व संघर्ष को नहीं भुलाया जा सकता तो इस प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि यह आजादी बिना खड़ग, बिना ढाल के नहीं मिली। आजादी के इन बातों को हम नहीं समझेंगे तो आजादी की सांझ हो जाएगी। सुभाष चंद्र बोस कहते थे कि आजाद होना तो आसान है किंतु आजाद रहना मुश्किल है। इसके लिए हमें संघर्ष करना ही होगा।

"ना संघर्ष न तकलीफ, तो क्या मज़ा है जीने में,
बड़े बड़े तूफ़ान थम जाते हैं, जब आग लगी हो सीने में!"

23 वर्ष के भगत सिंह ने फांसी के फंदे को चूमने से पहले कहा कि एक भगत सिंह शहीद होगा तो क्या हुआ, भारत देश की प्रत्येक मां के कोख से भगत सिंह पैदा होगा। इस आजादी के इतिहास को हमें सभी के संज्ञान में लाना होगा। विश्वविद्यालयों में सही इतिहास से विद्यार्थियों को परिचित कराना होगा।

भारत किसी एक व्यक्ति के नेतृत्व पर नहीं खड़ा हुआ है बल्कि सभी भारतवासी का उसमें योगदान है। हमारा- आपका जन्म बहुराष्ट्रीय कंपनी में प्लेसमेंट के लिए नहीं हुआ है बल्कि समाज का रक्षक बनने के लिए, सेना में भर्ती होने के लिए और भारत माता के प्रति समर्पित होकर देश के लिए कुछ करने के लिए हुआ है। विरोधी शक्तियां कितनी ही मजबूत होंगी लेकिन जब भारत खड़ा होगा तो उसके सामने कोई नहीं टिकेगा। कोई सत्ता नहीं टिकेगी देश विरोधी ताकतें भी नहीं टिकेंगी, ऐसा ही हमने आज तक देखा है। प्रत्येक कालखंड में जब-जब भारत पर संकट आया है तो भारत अपने बल पर खड़ा होकर दिखाया है। आज तकनीकी के दम पर, सैन्य बल के दम पर, आर्थिक मजबूती के दम पर भारत पुनः विश्व में शक्ति के रूप में खड़ा हुआ है।

आज अभाविप जैसा संगठन देश के सामने है जो प्रत्येक समस्याओं व चुनौती को स्वीकार कर उसे जीतने का कार्य करता है। भारत ज्ञान परंपरा, विश्व बंधुत्व के लिए कार्य करने वाला देश है और विवेकानंद जी कहते हैं कि मेरा सौभाग्य है कि मैं उस हिंदुत्व से आता हूं जो किसी देश पर कभी आक्रमण नहीं किया।

हमने कहा कि एक समय था जब हम संघर्ष के साथ संगठन खड़ा कर रहे थे, किंतु आज वह समय नहीं है। आज ऐसा समय है कि राष्ट्र को रिवाइव करने के लिए हमें संघर्ष करना है। सबके लिए रोटी, कपड़ा और मकान हो इसकी चिंता करनी है। आजादी के पश्चात किसी ने कहा भारत को अमेरिका की तर्ज पर बनाना है तो किसी ने कहा कि भारत को रसिया के तर्ज पर बनाना है। किंतु इस संदर्भ में विद्यार्थी परिषद तो अपने प्रारंभिक काल में ही स्पष्ट मान्यता रखती है। उस समय भी विद्यार्थी परिषद ने कहा था कि भारत को भारत माता के चरणों में बैठकर भारत बनाना है। हमें मेकिंग ऑफ न्यू नेशन के लिए काम करना है और भारत को बनाए रखने के लिए भारत को निखाखने के लिए किसी भी प्रकार की चुनौती को स्वीकार करते हुए उसे जीतना है। 2047 में आजादी के 100 वर्ष के बाद हम भारत को किस रूप में देखना चाहते हैं, इसके लिए अभी से हमें दिशा व दशा तय करनी होगी। हमें अपने- अपने स्थान पर स्वाधीनता के 100 वर्ष की तैयारी स्वरूप, 100 वर्ष के स्वाधीन भारत का दृश्य कैसा होगा एवं उसके लिए हमें क्या करना होगा, ऐसे संकल्प के साथ अपने प्रत्येक नगर इकाई में कार्य करना होगा।

इतिहास को ध्यान में रखते हुए वर्तमान की दहलीज पर खड़े होकर भविष्य के भारत के सपने को लेकर हमें आगे बढ़ना होगा और संपूर्ण विश्व कल्याण के लिए, संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए हम आगे बढ़ेंगे क्योंकि भारत स्वार्थ के लिए नहीं जीने वाला देश है। यह भारत "तमसो मा ज्योतिर्गमय" के भाव को लेकर जीने वाला देश है। ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन (राष्ट्रीय परिषद)
24-26 दिसंबर, 2021 जबलपुर (महाकोशल प्रांत)
प्रस्ताव क्रमांक – 2

शिक्षा की पवित्रता को बचाने हेतु शिक्षा समुदाय आगे आये

भारत केन्द्रित तथा छात्र केन्द्रित शिक्षा के संकल्प पत्र के रूप में देश के समक्ष प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयत्नों का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह 67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन स्वागत करता है। सहायक आचार्य के पदों पर नियुक्ति हेतु शोध की अनिवार्यता में 2023 तक छूट देना, महिला शोधार्थियों को शोध की अवधि के मध्य में मातृत्व अवकाश/शिशु देखभाल के लिए 240 दिनों का अवकाश देना, अकादमिक जॉब पोर्टल आरंभ करना, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा महिलाओं को दी जाने वाली पोस्टडॉक्टोरल फैलोशिप की समय अवधि को छह मास के लिए विस्तारित करने जैसे प्रयासों का अभाविप स्वागत करती है।

चीनी कोरोना वायरस के कारण देश को लंबे समय तक तालाबंदी दौर से गुजरना पड़ा, परिणामस्वरूप शिक्षा की गुणवत्ता व्यापक रूप से प्रभावित हुई है। कोरोना के संक्रमण से शिक्षा बाधित न हो, इस हेतु शैक्षणिक संस्थानों द्वारा आभासी शिक्षण, परीक्षा एवं मूल्यांकन की व्यवस्था आरंभ की गई। परंतु अब जब कोरोना की परिस्थिति समान्य हो गई है तथा टीकाकरण की सुविधा भी उपलब्ध है, ऐसी स्थिति में भी शैक्षणिक संस्थानों को प्रत्यक्ष रूप से अभी भी न चलना तथा आभासी शिक्षण, परीक्षा और मूल्यांकन के लिए दबाव बनाना शिक्षा के प्रति हमारे उपेक्षात्मक दृष्टिकोण का परिचायक तो है ही, साथ ही साथ यह हमारे सामूहिक नैतिक पतन को भी दर्शाता है।

प्रबंधन द्वारा आभासी शिक्षा चालू रखते हुए भी शिक्षण कार्य के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के शुल्क विद्यार्थियों से लेना और लिए जाने वाले शुल्क के बदले मिलने वाली सुविधाओं से छात्रों को वंचित रखना, प्रबंधकों के भ्रष्ट और शोषणकारी प्रवृत्ति का परिचायक है। आभासीय कक्षाओं को छात्रों द्वारा गंभीरतापूर्वक न लेना, परीक्षा के नकल के लिए नए मार्ग ढूंढना, बिना परिश्रम परीक्षा उत्तीर्ण करना और अधिक अंक प्राप्त करने के अवसरों की तलाश करने की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण शिक्षा में अनेक प्रकार के कदाचार बढ़ रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में कुछ राज्य बोर्ड के द्वारा स्थिति का अनुचित लाभ लेते हुए छात्रों को सौ प्रतिशत अंक देना शिक्षा की गुणवत्ता को नष्ट भ्रष्ट करने का षड़यंत्र भी सामने आया है। इस षड़यंत्र के द्वारा देश के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के संसाधनों पर अधिग्रहण करके ऐसे शैक्षणिक संस्थानों के सर्व समावेशी रूप को नष्ट किया जा रहा है। इस प्रकार की पद्धति के पोषण से देश के अन्य राज्यों के मेधावी एवं परिश्रमी छात्रों के प्रवेश के अवसर को छीनकर उनके भविष्य को अंधकार में डाला जा रहा है।

परिसर के प्रत्यक्ष के रूप में न चलने के कारण इसके माध्यम से विद्यार्थी में होने वाले बहुआयामी विकास बाधित हो रहे हैं, जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, रचनात्मकता, नवाचार, सामूहिकता जैसे गुणों का विकास जो सहज एवं स्वाभाविक रूप से हुए करते थे, वर्तमान परिस्थिति

में इनके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जिसके कारण विद्यार्थियों की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति भी प्रभावित हुई है। साथ ही, विद्यार्थियों द्वारा संस्थान छोड़ने का अनुपात भी बढ़ा है।

शिक्षा के नैतिक पतन को रोकने हेतु अविलंब शिक्षण संस्थानों को प्रत्यक्ष रूप से खोला जाए तथा शैक्षणिक परिसरों में आने के लिए छात्रों में रुचि उत्पन्न करने हेतु परिसर खोलने के कुछ दिवस पूर्व खेल प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम अथवा व्यक्तित्व विकास शिविर जैसे उन्मुखीकरण के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। साथ ही शैक्षणिक संस्थानों में अनौपचारिक चर्चा पर बल दिया जाय। परिसर खोलने के पश्चात अभिभावक, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य संवाद को बढ़ाया जाए एवं शिक्षा की गुणवत्ता हेतु सहानुभूति पूर्वक प्रत्यक्ष परीक्षाएं संपन्न की जाए, जिससे कि परीक्षा विद्यार्थियों के लिए मानसिक तनाव उत्पन्न कनरे का उपकरण न बन सके। इस प्रकार के सार्थक छात्र जीवन हेतु आनंदमयी परिसर का निर्माण किया जाए।

अखिल भारती विद्यार्थी परिषद का यह 67 वां राष्ट्रीय परिषद शिक्षा क्षेत्र के सभी घटक यथा शिक्षक, अभिभावक, विद्यार्थी एवं प्रबंधकों से यह आह्वान करती है कि देश के उज्जवल भविष्य को प्राथमिकता देते हुए शिक्षा में हो रहे नैतिक पतन को रोकने एवं शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने हेतु अपने उत्तर दायित्व का निर्वहन करें। ■

पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन

व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला है अभाविप : वी. डी. शर्मा

अधिवेशन के दूसरे दिन पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसमें भारी संख्या में परिषद के पूर्व कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं मध्यप्रदेश भाजपा के अध्यक्ष व सांसद वी. डी. शर्मा ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में छात्र-छात्राएं समान्य अवस्था में आए हैं, वे आज राष्ट्रवादी चरित्रवान व्यक्तित्व के साथ समाज के अनेक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आज से 22 वर्ष पूर्व जब मैं जबलपुर आया था तब विद्यार्थी परिषद के पास इतने संसाधन नहीं थे। हमने विपरीत परिस्थितियों में भी बहुत सारे कार्य किये और कार्य करते – करते हमारे अनेक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास हो गया। विद्यार्थी परिषद में आने के बाद मेरे अंदर अनेक विकास हुए, विद्यार्थी परिषद आज छात्र संगठन की भूमिका से आगे निकलकर सामाजिक संगठन बन चुका है। मैं गर्व से कह सकता हूं कि विद्यार्थी परिषद व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला है। पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत, क्षेत्रीय संगठन मंत्री चेतस

सुखाड़िया, प्रांत संगठन मंत्री विपिन गुप्ता, महाकौशल प्रांत के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नंदलाल इंदनानी, विशेष ओलंपिक की अध्यक्षा मल्लिका बनर्जी नड्डा, नंदिता पाठक समेत भारी संख्या में पूर्व कार्यकर्ता उपस्थित थे. लंबे अंतराल के बाद हुए संगम में सभी की यादें स्मृतिपटल पर तैरती दिखी। ■

अभाविप के 75 वर्ष की उपलब्धियां और आगे की दिशा

| प्रा. मिलिंद मराठे |

"अभाविप के 75 वर्ष की उपलब्धियां और आगे की दिशा'' विषय बड़ा व्यापक है । देखते-देखते विद्यार्थी परिषद के क्रियाकलापों के 75 वर्ष में हम प्रवेश कर रहे है, 74 वर्ष हो गये । We Completed 74 meaningful years of our existence on this "Mother Earth." मैं सोच समझ कर "भारत" नहीं कह रहा हूं, "Mother Earth" कह रहा हूं। इसका एक वैश्विक संदर्भ भी हैं। इसलिए कह रहा हूं। हम कौन हैं ?हमारा मूल क्या है ? विद्यार्थी परिषद की विरासत क्या है ? 75 वर्षों में हमने क्या किया है ? जब कभी हम हमारी उपलब्धियों कि बात करते हैं तो यह बात हमारे मन से कभी ओझल नहीं होनी चाहिए कि कुछ कमी तो नही रह गई, इस पूरे प्रवास में कुछ बातें छूट तो नहीं गई, कुछ बातें हम कम तो नहीं कर पाए, इस बात को ध्यान में रखना पड़ेगा। क्योंकि इसी से विद्यार्थी परिषद के आगे का मार्ग प्रशस्त होगा। विद्यार्थी परिषद के स्थापना की भूमिका क्या है ? दो-तीन बाते में आप सबके सम्मुख कहना चाहूंगा।

1) सबसे पहली बात है कि हमारा अडिग विश्वास है । किस पर हमारा अडिग विश्वास है ? भारत की एकता और संप्रभुता अत्यंत पवित्र और non negotiable है Can Not Negotiate Anything About National Unity and Integration Nation It is very much sacred pious. हमने important शब्द का प्रयोग नहीं किया। हमने it's sacred शब्द का प्रयोग किया क्योंकि भारत की एकता और संप्रभुता हमारे लिए अत्यंत "पवित्र" केवल महत्वपूर्ण नहीं है और non negotiable है। इसका मोल-भाव नहीं हो सकता। कई उदाहरण हमने देखे हैं। 1962 के चीन आक्रमण में हमारे द्वारा किया हुआ रक्तदान हो, 1990 के कारगिल युध्द में हमारे द्वारा निभाई गई भूमिका हो, इतना ही नहीं जब-जब देश को तोड़ने वाली कोई भी शक्ति सर उठाती है, हमने उसके खिलाफ संघर्ष किया है । क्योंकि National Unity and Integrity is Sacred and Non Negotiable. केवल 3 बीघा जमीन हो, चिकननेक जैसा विषय हो, बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों के बारे में छेड़ा हुआ Save Asamका आंदोलन हों, यह सभी बाते उससे उत्पन्न होती हैं। । चिकननेक में तो हमने यह कहा कि जो भी illegal migrants है Detect Delete and Deport.

2) दूसरी, हमारी महत्वपूर्ण बात है और हमारा विश्वास है कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का लक्ष्य अकेले से नहीं होगा । ना कोई चंद मुट्ठी भर इंटेलेक्चुअल्स, थिंकटैंक्स, पॉलिसी मेकर्स या समाज का कोई एक विशिष्ट वर्ग, जैसे दुनिया के किसान मजदूर एकत्र हो जाओं और हम सब बदल देंगे।नहीं संभव है, तो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का लक्ष्य भी कोई भी एक वर्ग नहीं कर पाएगा। भारत के प्रत्येक व्यक्ति के जन सहभागिता से ही यह संभव है । यही राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य को हासिल करने का एकमात्र विकल्प है। इसीलिए जब

हम देखेंगे पिछले 74 वर्षों पर विद्यार्थी परिषद ने हमेशा सहभागी दृष्टिकोण(participative approach) के साथ कई प्रकार के कार्यक्रम किए है । इसलिए हम गीतो में बोलते हैं कि एक के दश लक्ष्य होकर कोटियों को है बुलाना, क्यों बोलते है ? हम यह नहीं कह सकते कि हम मुट्ठीभर बुद्धिजीवि (Intellectual) है, हार्वर्ड जैसे इधर-उधर से पढ़-लिख कर आए हैं, हम स्थिति को संभाल सकते हैं (we can handle the situation) विद्यार्थी परिषद का यह विश्वास है कि Participatory efforts of every individual in developing a nation and transformation of the nation is important और यह क्यों ? समान्य बात है कि हम देश को माता मानते हैं और माता के हम सहोदर पुत्र हैं ।

3)तीसरा, विश्वास क्या है ? तीसरा हमारा विश्वास है कि National Reconstruction Is Our Life Mission. न अन्यः पंथः कोई दूसरा मार्ग नहीं है, It is the too Long Way, but if it is the only way then it is the Shortest. इसलिए One Life One mission is the only way. इसीलिए यही हमारा एकमात्र मार्ग है । इसीलिए One Life One Mission. आज इस पंडाल में उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं के लिए यह सोचना होगा कि मेरे जीवन का मिशन क्या होगा? मैं मानता हूं कि हरेक व्यक्ति एक प्रकार का काम नहीं करता हैं, क्योंकि समाज में परिवर्तन के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने की आवश्यकता है। जो समस्या, जो बिंदु मेरे हृदय को छू जाता है उस किसी भी एक बिंदु विषय को लेकर जीवन पर्यंत काम करेंगे, निस्वार्थ रूप से काम करेंगे, सामाजिक भाव से काम करेंगे, Nation First Attitude से काम करेंगे, One Life One Mission पर हमारा विश्वास है।

विद्यार्थी परिषद की कुछ प्रतिबद्धताएं भी हैं -

1) हजारों वर्षों की समृद्ध परंपरा, सभ्यता, भारतीय जीवन दर्शन ही हमारे प्रत्येक कृति का प्रेरणास्रोत है। भारतीयत्व, Indianness और भारतीय दर्शन ही हमारी सभी समस्याओं को हल करनें में सक्षम हैं।

किस बात पर हमारी प्रतिबद्धता है, किस बात पर हमारा कमिटमेंट है, हमारा कमिटमेंट है कि हजारों वर्षों से समृद्ध परंपरा सभ्यता हमारा भारतीय दर्शन यही हमारे प्रत्येक कृति का प्रेरणा स्रोत है। We drive Inspiration from our Age Old Civilization and philosophy of bhaaratiyatva with rich heritage and which Is capable of solving All Types Of Complex Problems not only of this Country but of the World. यानी भारतीयत्व (इंडियननेस) ही हमारी प्रत्येक कृति का प्रेरणास्रोत है। इसलिए हम दीप प्रज्ज्वलन करते हैं । हम केक नहीं काटते, केक काटना गलत है क्या ? केक काटना गलत नहीं हो सकता लेकिन हमारी पद्धति में वह नहीं है । मै इंजीनियरिंग कॉलेज का प्राध्यापक हूं, तो किसी एक ने पूछा कि आप दीप प्रज्ज्वलित करते हैं, आज के जमाने में इलेक्ट्रिकल लैंप रिमोट कंट्रोल से क्यों नहीं जलाते ? वही पुरानी दीया बाती, तेल और ज्योति से लगाना आप पिछड़े हुए नहीं लगते ? इस advance era of टेक्नोलॉजी के समय? तो क्या आपको नहीं लगता हम ये नहीं कर सकते ? हम मोबाइल स्विच ऑन करके अभाविप के गीत सॉन्ग का launching हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री कर सकते हैं तो रिमोट कंट्रोल करके लाइट ऑन करना हमको आता नहीं है ? ऐसा लग रहा है लोगो को?Actually ABVP use modern technology लेकिन दीप प्रज्ज्वलन रिमोट से नहीं। हमने उनको कहा कि भारतीय संस्कृति का कार्य हमारे किसी भी कृति का मूल प्रेरणा स्रोत है क्योंकि हम हमारी ज्योति से जो प्रज्ज्वलित है वही दीप दूसरे दीप को प्रज्ज्वलित कर सकता है । एक 40 watt के बल्ब को दूसरे बल्ब के साथ जोड़ दो तो वह प्रज्ज्वलित नहीं होता। दूसरे के कंट्रोल में भी उसका जलना निर्भर नहीं रहता। खुद जल कर लोगों को प्रकाश देना हमें यह दीप सिखाता है । इसलिए आज भी वही पुरानी दीया-बाती, तेल और ज्योति जो स्वयं प्रकाशी है स्वयं जलकर दूसरे को प्रकाश देती, दूसरे को प्रज्जवलित भी कर सकती और Controlled from remote नहीं । इसीलिए ऐसी प्रत्येक कृति की प्रेरणा भारतीय संस्कृति ,कल्चरल हेरिटेज, विजडम यह सब बातें हमारी है । हमारी सभी समस्याओं का हल करने की ताकत भारतीय दर्शन में है लेकिन वह जो Indianness है, भारतीयत्व है, उसका आत्मा क्या है ? वह आत्मा है धर्म । मुझे बताया गया है कि हमारे उद्घाटन करता आदरणीय कैलाश सत्यार्थी जी ने शायद हमारे वेबसाइट पर देखकर धर्म शब्द का उल्लेख किया। विद्यार्थी परिषद का इस वक्त Clear

Vision About Our Dharma. क्योंकि भारतीयत्व का आधार धर्म हैं। अपने सर्वोच्च न्यायालय का बोध वाक्य क्या है ? "यतो धर्मःस्ततो जयः" । हमारे भारतीय संसद जहां देश भर के करोड़ों नागरिक प्रतिनिधि चुनकर भेजते हैं वे प्रतिनिधि संविधान के अनुसार भारत को चलाते हैं। उस संसद का बोध वाक्य क्या है - "धर्म चक्र प्रवर्तनाय" है, यह ऐसे ही नहीं है। धर्म का मतलब पूजा पद्धति नहीं है, मैं शिव को पूजता हूं कि मैं ऋषि को पूजता हूं कि मैं अल्लाह को पूजता हूं कि मैं दशमेश गुरु साहिब को पूजता हूं कि मैं गुरु ग्रंथ साहिब को मानता हूं यह नही है, बहुत सटीक शब्दों में धर्म की व्याख्या जो विद्यार्थी परिषद ने मानी है वह है

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः । धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।

इन तत्वो को आधार रख कर हमने विद्यार्थी परिषद के 74 वर्षो के क्रियाकलापो को चलाया है ।

2) राष्ट्रीय चेतना व स्वयं के प्रति आत्मसम्मान के भाव को जगाना ही देश के विकास और सामाजिक परिवर्तन की पूर्व शर्त हैं।

3) जागरूक सामाजिक दर्शक(social watch - dog) सामाजिक आलोचक(सोशल critic) और सामाजिक निवारक (social deterent) की भूमिका से अभाविप प्रश्नोंको सुलझाने हेतु काम करेगी। समाधान की ओर जाना। We are solution oriented।

अब कोई बोलता है कि विद्यार्थी परिषद की उपलब्धियां क्या है ? मैं तो यह मानता हूं कि इन 74 वर्ष की सबसे पहली उपलब्धि है कि

1) विद्यार्थी संगठन का छात्र आंदोलन का "दर्शन" अपने समाज के सम्मुख रखा और केवल समाज के समक्ष नहीं रखा उसको प्रत्यक्ष जी कर दिखाया। वो भी 2-4 वर्ष नहीं लगातार, निरंतर 74 वर्ष।सतत वृद्धिंगत,वर्धिष्णु,गुणासंपन्न, सर्वे व्यापी, सर्वस्पर्शी बनाया हैं। विद्यार्थी परिषद कि कितनी ही पीढ़ियां बदल गई परंतु आज का विद्यार्थी परिषद भी उसी भाव के साथ मुख्य विचार को लेकर काम कर रही है ।

दूसरा, केवल मैं अस्तित्व (Existence) की बात नहीं कर रहा हूं यह अस्तित्व (Existence) लगातार गुण सम्पन्न होता गया है। सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी बना है, कभी इसके दो टुकड़े नहीं हुए । मूझे कभी-कभी लगता है कि This is Time tested successful Model of students organisation. और एक दावा तो विद्यार्थी परिषद कि उपलब्धियां कहते समय मैं करना चाहुंगा कि विश्व के किसी भी देश में किसी को भी आदर्श छात्र संगठन खड़ा करना है तो उसे अपने interns को अभाविप में भेज देना चाहिए। दो साल के लिए। दो साल बाद जब वह अपने देश में जायेगा तब वह अभाविप की कॉपी नहीं करेगा । इस तत्व को लेकर उसी देश की मिट्टी से निकले हुऐ विचार को लेकर उस देश के अनुकूल एक आदर्श छात्र संगठन अभाविप की प्रेरणा से वह खड़ा कर सकता है । यह एक विचार जो टाइम टेस्टेड़ मॉडल है । यह अभाविप ने समाज के सामने रखा और यह एक बड़ी उपलब्धि हैं ।

2)दूसरी हमारी उपलब्धि क्या है ? हमने छात्रों का विश्वास अर्जित किया है कि किसी भी शैक्षणिक समस्या का समाधान अभाविप के पास हैं । कोरोना काल में कैंपस बन्द हो गये थे, शोधार्थी अपना कार्य सही से नही कर पा रहे थे तो अभाविप ने मांग की थी कि थिसिस सबमिट करने की तिथि को एक साल के लि बढा देना चाहिए । Students - United - Will Always be Victorious. यह विश्वास हमने छात्रों के मन में उत्पन्न किया और यह करते समय हम नहीं कहते थे कि यह समस्या दो मिनट में सुलझा देंगे, हम कहते थे कि विद्यार्थी परिषद का कमिटमेंट रहेगा। अत्यंत प्रमाणिकता के साथ विद्यार्थी परिषद आपके लिए संघर्ष करेगा। प्रशासन से दबेगा नहीं । यह विश्वास छात्रों को है कि ज्ञापन, धरना, प्रदर्शन, आरटीआई, कोर्ट में जनहित की याचिकाएं हर संभव अभाविप प्रयास करेगा और आपकी समस्याओं को लॉजिकल एंड तक ले जाने के लिए आपके साथ संघर्ष करेगा। इसलिए छात्र ऐसी समस्याओं के लिए विद्यार्थी परिषद के पास ही आते हैं । यह विश्वास आम छात्रों में उत्पन्न करना विद्यार्थी परिषद की उपलब्धि है।

3) तीसरी उपलब्धि यह है कि जहां-जहां विद्यार्थी परिषद की उपस्थिति है वहां-वहां राष्ट्र विरोधी, समाज विरोधी, गणतंत्र विरोधी, विकास विरोधी और महिला विरोधी शक्तियां परास्त हो गई हैं । लेकिन दूसरी ओर जहां-जहां अभाविप अनुपस्थित हैं वहां-वहां यह सभी शक्तियां अपना सर उठा कर देश की एकात्मता को चुनौती देती है । इसलिए कई बार कहते हैं कि अच्छा एबीवीपी भारत माता की जय वाले, तो बड़ा अच्छा लगता

है, यह विद्यार्थी परिषद की पहचान है। विद्यार्थी परिषद माने भारत माता की जय वाले । अभाविप की जय नहीं बोलते हैं। इसीलिए जहां-जहां अभाविप है वहां-वहां राष्ट्र के लिए कुछ भी करेंगे।राष्ट्र सर्वप्रथम भाव की guarantee है।प्रश्नों के हल करने की गुंजाइश बनी रहती है।

4)विद्यार्थी परिषद ने एक और उपलब्धि हासिल कर ली है वह यह है कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों को नेतृत्व देने का काम किया है । आज भी हमें अभाविप के कार्यकर्ता सभी जगह सभी क्षेत्रों में देखने को मिलतें है । जीवन दृष्टि से जीवनभर समाज में कार्यरत कार्यकर्ता। प्रसाद देवघर, अशोक जी भगत - ग्रामविकास, नंदिता पाठक - चित्रकूट, गिरीश कुलकर्णी - नगर कितने लोग? युवा पुरस्कार प्राप्त युवक, ये अभाविप ने new youth Icons समाज को दिए हैं।

5) अभाविप ने केवल ऐसे icons नही उत्पन्न किए तो सामाजिक समता का पालन करनेवाला,जाति,पंथ,भाषा के भेदों से ऊपर उठा हुआ, प्रामाणिक, भ्रष्टाचार न करनेवाला, व्यसनों से मुक्त, वैयक्तिक शुचिता का पालन करनेवाला, चारित्र्य का पक्का, देश के लिए कोई भी कुछ अच्छा कर रहा हैं तो उसे यथाशक्ति मदद करनेवाले लाखो, करोड़ों कार्यकर्ता हमने समाज में अभिसारित किए हैं और एक सज्जन शक्ति खड़ी की हैं।

6)सशस्त्र, हिंसक, माओवादी विचारों के विरुद्ध , संविधान सम्मत पद्धति से आंदोलन करके शहरी माओवादियों का नकाब उतारकर, उसके लिए अपने कार्यकर्ताओं ने जान देकर उन देश विरोधी शक्तियों को कॉलेज कैंपस से परास्त करनेवाला अभाविप एकमात्र छात्र संगठन हैं।

7) 1975 में आपातकाल के विरुद्ध लोकतंत्र की स्थापना हेतु यशस्वी संघर्ष करने वाला, लड़नेवाला संगठन ABVP.

सफलता और सार्थकता दो अलग चीजें हैं। रामायण का उदाहरण हैं। रावण ने सीता माता का हरण किया। वो करने मे रावण सफल रहे, लेकिन क्या वो सार्थक था? तुरन्त उसके बाद वो सीता माता को लेकर उड़ा और आकाश मार्ग में जाते हुए एक पक्षी ने उसे रोका। उसने सोचा कि मैं जो भी हूं लेकिन एक व्यक्ति, स्त्री को बलात ले जा रहा है। इसे मैं कैसे रोक सकता हूं ? वो तुरंत अपने पंख पसार कर रोकने लगा। अब रावण ने उसका एक पंख काट दिया वो नीचे गिर गया बाद में उसकी मृत्यू हो गई। वह यशश्वी नहीं रहा उसके निहित कार्य में। लेकिन क्या उसका प्रयास सार्थक नहीं था ? इसलिए सार्थक और सफल इसका अंतर ठीक तरीके से समझने की आवश्यकता है। और लगता है कि विद्यार्थी परिषद में सार्थक और सफल, इसका अंतर बताने का अच्छी तरह प्रयास किया है। हमने यहां पर एक बहुत अच्छा वातावरण उत्पन्न किया है। छात्र, छात्राएं, अध्यापक, अभिभावक एक परिवार निर्माण किया है। परिवार मे जैसे सब रहते हैं, एक बहुत अच्छा निर्मल, शुद्ध, सात्विक वातावरण हमने विद्यार्थी में उत्पन्न किया है। आनन्दमयी और सार्थक विद्यार्थी जीवन को पुष्ट करने वाले, मुझे लगता की विद्यार्थी परिषद एक अलग शक्ति के साथ अपने निहित कार्य की ओर अग्रसर होंगा और इस मंच के सम्मुख जो पंक्ति लिखी है वो हम सार्थक कर पाएंगे- '' आत्मागौरव भाव लेकर देश आगे बढ़ चला है, पथ सदा हमने चुना वह, विश्व का जिसमें भला है'' । हमने कभी अपने लिए कार्य नहीं किया, विश्व कल्याण के लिए हम कार्यरत रहे और वह कार्य करने की शक्ति ईश्वर हम सभी को दे। ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' जनवरी 2022 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti

Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad

67th NATIONAL CONFERENCE (National Executive Council)

December 24, 2021 Jabalpur (Mahakoshal Prant)

RESOLUTION NO. – 3

Present Scenario

India as a nation has been celebrating the AmritMahotsav on its 75th year of independence. The reconstruction of Kashivishwanath and Kedarnath temples has been a symbol of modernand spiritual India. It is seen that the entire country has faced corona epidemic with theawakened spirit of the society , at the same time achieving the target of 150 crore vaccinationsin a very short time has shown the efficiency and willpower of India to the world. Due to prolonged lockdown situation, the economy of the country and the world has collapsed as aresult of which inflation is increasing. Due to the increase in the prices of daily commoditiescommon people are facing difficulties in leading lives. As a part of controlling inflation thecentral government's decision of reducing the prices of petrol and diesel is a welcome step.State governments should also make similar efforts in order to support the lives of people. It isseen that there is increasing employment opportunities in India because of increasing foreigninvestment. This 67th National Conference of ABVP appeals the Central and StateGovernments to take effective steps towards controlling inflation. The country's employmentrate has increased to 42.40 percent in the fourth quarter of 2021 from 40.90 percent in the 2020quarter.

The sudden demise of Chief of Defence Staff General BipinRawatji, his wife MadhulikaRawatji and 12 other army officers in a helicopter crash a few days ago is an irreparable lossto the country.

The law-and-order situation in Maharashtra and Rajasthan is deteriorating continuously, as aresult of which the morale of criminal elements has been increasing. Incidents of molestationof women have increased by 31%. To control the situation, there is a need to strictly implementthe laws like that of Uttar Pradesh government.

Our country is moving towards population explosion. Population Control bill and UniformCivil Code are the need of the hour. Early steps should be taken regarding them.

Incidents of violence by foreign forces in the North-East states are worrying. The incidents ofdestruction of temples by the Tamil Nadu government while promoting religious appeasementare condemnable. On January 26 2021, the Congress government in Punjab honoured thechaotic elements who insulted the national flag and national symbols at the Red Fort by

givingtwo lakh rupees . Establishment of University Chairs for Bible studies and providing otherspecial facilities are signs of appeasement politics. The central government has providedauthority to the BSF to conduct inspections within a radius of 50 kms from the InternationalBorder to control cow smuggling, drugs and other illegal trade activities in Punjab and WestBengal , which is being criticised by the opposition .

Opposing this aforementioned decision by the opposition is condemnable because it's a clearconspiracy to break the unity and integrity of the our country.

In a democratic country like India, anti-social organizations like SDPI are continuouslycommitting violence on the basis of caste and creed in Kerala . ABVP demands the centralgovernment to put a stop to such organizations at the earliest.

Jihadi violence against Hindu minorities is rising in neighbouring Afghanistan and Bangladesh.After the establishment of the Taliban state in Afghanistan, the morale of Islamic jihadielements within India has also increased and as a result of this violence has increased in theStates of Jammu and Kashmir, Tripura, West Bengal and Kerala. Islamic terrorism has becomea problem for the entire humanity today, there is a need to unite to tackle such challenges.

The Delhi government in order to increase its revenue has proposed a law in the name of NewLiquor (Excise) Policy 2021, which enables door to door delivery of liquor and promotes theconsumption of liquor which is harmful for the society.

The present Jharkhand government (Congress and JMM alliance), in appointment of third andfourth class employees has made Hindi, Magahi, Bhojpuri, and Angikab language speakingstudents inelegible for all appointments . Applicants speaking only Tribal Regional Languagehave been made elegible for the appointment. Since,this is creating a situation of linguisticdiscrimination and alienation in the society, this National Conference demands that the CentralGovernment should take concrete steps to stall this disruptive and separatist policy of the StateGovernment.

ABVP welcomes the initiative taken by the Central Government to increase the age of marriagefor women from 18 to 21 years , to give permanent commission to 11 women Army officersand to link voter ID card with Aadhar card.

The Agni Prime missile was successfully test fired in the modernization efforts of the IndianArmy. The Agni Prime missile is the new generation advanced missile of the Agni series. Itsrange is between 1000 to 2000 kms Capable of dealing with all types of air strikes, the S-400Air Defence Missile System, made of the highest technology, has been purchased by theGovernment of India from Russia. The efforts of the Central Government to strengthen thesecurity system of the country are commendable.

The AkhilBharatiyaVidyarthiParishad welcomes the recent decision taken by the Jammu andKashmir government to name all educational institutions after the martyred soldiers.

In COP-26 summit for environmental protection, India has set a target of net zero carbonemissions by 2070.The national conference of AkhilBharatiyaVidyarthiParishad urges thestudents and youth power to come forward in fulfilling this task. ■

सदैव प्रेरक रहेंगे नेताजी

| अभिषेक रंजन |

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' –इस उद्घोष के जरिये भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नई जान फूंकने वाले नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती देश पराक्रम दिवस के रुप में मना रहा है। नेताजी हर देशवासी के दिलों पर राज करने एक ऐसे नायक है, जिन्हें याद कर देश के लिए जीने, देश के लिए मर मिटने कीप्रेरणा मिलती है।

आरंभिक जीवन

सुभाष चन्द्र बोस का जन्म ओड़िशा के कटक शहर में 23 जनवरी 1897 को हुआ था। नेताजी के पिता कटक शहर के मशहूर वकील जानकीनाथ बोस थे, वही मां का नाम प्रभावती था।

बेहद संभ्रात परिवार में जन्मे नेताजी की शिक्षा दीक्षा कलकत्ता के स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई, जहाँ उन्होंने दर्शनशास्त्र में स्नातक की उपाधि हासिल की थी। भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी का लक्ष्य लिए नेताजी वर्ष1919में इंग्लैंड पढ़ने चले गए। 1920 में इस कठिन परीक्षा में चौथा स्थान हासिल किया, लेकिन जलियावाला बाग नरसंहार से व्यथित हो 1921 में प्रशासनिक सेवा से नेताजी ने इस्तीफा दे दिया।

राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश

महात्मा गांधी के संपर्क में आने के बाद नेताजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हिस्सा बने और देशबंधु चितरंजन दास के साथ काम करने लगे। 1928 में आयोजित कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में गांधी जहाँ पूर्ण स्वराज की मांग से सहमत नहीं थे, वहीं नेताजी पूर्ण स्वराज की मांग पर अड़ गए। नतीजा ये निकला कि अंग्रेजी सरकार को एक वर्ष का समय दिया गया ताकि वे डोमिनियन स्टेटस दे सके। अन्यथा की स्थिति में पूर्ण स्वराज की मांग लिए संघर्ष का निर्णय हुआ। अंग्रेजों ने जब ये मांग ठुकरा दी तो 1930 में लाहौर में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में तय किया गया कि 26 जनवरी को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

वर्ष 1930 से 1937 तक नेताजी को दो बार जेल की सजा हुई। इस दौरान एक लंबे समय तक वे यूरोप में रहे और भारत व यूरोप के राजनैतिक व सांकृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए अनेक शहरों में संपर्क केंद्र की स्थापना की। इस दौरान जब वे भारत लौटे तो अंग्रेजों ने उन्हें दुबारा जेल भेज दिया, लेकिन 1937 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी 7 राज्यों में जबरदस्त चुनावी सफलता मिली तो नेताजी की रिहाई हो सकी। नेताजी का कारवां यहाँ नही रुका। हरिपुरा अधिवेशन (1938) में अध्यक्ष बने नेताजी ने 'राष्ट्रीय योजना समिति' का गठन किया। गांधी के पूर्ण समर्थन के बावजूद पट्टाभि सीतारमैया को वर्ष 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में 203 वोटों से हराकर नेताजी दोबारा अध्यक्ष तो चुन लिए गए लेकिन गांधी के विरोध ने उन्हें कांग्रेस से अलग होने पर मजबूर कर दिया।

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना

कांग्रेस छोड़ने का मन बना चुके नेताजी ने 3 मई 1939 को फॉरवर्ड ब्लॉक नाम से अपनी पार्टी बनाई। विश्व में जहां द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हो रही थी, भारत की आज़ादी के लिए मतवाले नेताजी ने फॉरवर्ड ब्लॉक के जरिये देश की आज़ादी की लड़ाई को और अधिक तेज करने के लिये जन-जागरण अभियान की शुरुआत की। फॉरवर्ड ब्लॉक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उस दौर में पार्टी के सभी प्रमुख नेता जेलों में कैद थे। जेल में बंद नेताजी ने आमरण अनशन के जरिये अंग्रेजी सरकार को झुकने और जेल से रिहा करने को मजबूर कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौर में अंग्रेज सरकार की घेराबंदी की तैयारी के लिए नेताजी का जेल से बाहर निकलना जरुरी था। जेल से रिहा होने के बाद नेताजी सक्रिय होते उससे पहले ही सरकार ने घर में ही उन्हें नजरबन्द कर दिया ताकि वे किसी तरह की राजनीतिक गतिविधियों में शामिल न हो सके।

आजादी के मतवाले नेताजी

घर में नज़रबंद नेताजी व्याकुल थे और चाहते थे कि जल्द इस बंधन से मुक्त होकर देश को गुलामी के जंजीर से मुक्त करें। विलक्षण प्रतिभा के धनी नेताजी अंग्रेजों को चकमा देकर जनवरी 1941 में अपने घर से भागने में सफल हुए और अफगानिस्तान होते हुए जर्मनी आ पहुंचे। अग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए नेताजी ने विदेशी सरजमीं से ही अपनी सक्रियता बढ़ा दी और जर्मनी और जापान से मदद की अपील की। रेडियो बर्लिन के जरिये नेताजी ने आज़ादी की मांग को पुरजोर तरीके से उठाना शुरू किया, जिसका बेहद उत्साही असर दुनिया के साथ साथ देशवासियों पर होना शुरू हुआ। लगभग दो वर्षों तक जर्मनी रहने के बाद नेताजी 1943 में सिंगापुर आ गए जहाँ उनकी मुलाकात रास बिहारी बोस से हुई और उनसे 'स्वतंत्रता आन्दोलन'की कमान लेकर आजाद हिंद फौजका गठन किया। आज़ाद हिन्द फौज़ के जरिये ही उन्होंने भारतवासियों के बीच 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का नारा दिया जिसके बाद बड़ी संख्या में युवा महिला पुरुष स्वतंत्रता संग्राम के इस निर्णायक लड़ाई में नेताजी के साथी बने। फौलादी इरादों वाले व्यक्तित्व नेताजी ने देश के हर जाती, मत,पंथ, क्षेत्र के लोगों को सैनिक बनाया। नेता जी ने 'रानी झांसी रेजीमेंट' बनाकर महिलाओं को अपने साथ विशेष रुप से जोड़ा। फौज के सैनिकों को नेताजी ने आधुनिक युद्ध लड़ने की ट्रेनिंग दी और सैनिकों को देश के लिए जीने, मरने का मकसद दिया।

'दिल्ली चलो' का नारा देते हुए नेताजी ने द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जापानी सेना की मदद से अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध सीधी लड़ाई की और अंग्रेजों से अंडमान और निकोबार द्वीप जीत लिये। यह सरकारअखंड भारत की पहली आज़ाद सरकार थी, जिसके मुखिया नेताजी थे।इन दोनों द्वीपों को नेताजी ने 'शहीद द्वीप' और 'स्वराज द्वीप' का नाम दिया था, जिसे पिछले वर्ष भारत सरकार ने दुबारा इसी नाम से नामकरण कर नेताजी की विरासत को सम्मानित किया। बाद में नेताजी के नेतृत्व में संयुक्त फौजों ने मिलकर इंफाल और कोहिमा पर भी आक्रमण किया लेकिन अंग्रेजों की अधिक ताकत की वजह से पीछे हटना पड़ा।

नेताजी की विरासत को संजो रही केंद्र सरकार

एक शानदार जीवनशैली के विकल्प रहते हुए भी नेताजी ने अपना जीवन माँ भारती के लिए अपनासर्वस्व समर्पण कर दिया। ऐसे महान नेताजी की विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्ववाली केंद्र सरकार ने कई प्रयास किए है। नेताजी की जयंती को पराक्रम दिवस के रुप में मनाने का निर्णय इनमें से बेहद प्रमुख निर्णय है। आज़ाद हिन्द सरकार के 75 वर्ष पूरे होने के मौके पर 2018 में केंद्र सरकार ने अंडमान के उस द्वीप का नाम नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप रखा, जिसे नेताजी ने सबसे पहले आज़ाद करवाया था। नेताजी की मौत आज भी रहस्मयी दास्ताँ बनी हुई है। ऐसे में देश की भावना को समझते हुए सरकार द्वारा नेताजी से जुड़ी फाइलें सार्वजनिक करने का सराहनीय फैसला लिया गया। 26 जनवरी 2018को देश भाव विह्वल था जब गणतंत्र दिवस परेड के दौरान आज़ादी हिन्द फ़ौज से जुड़े बुजुर्ग परेड का हिस्सा बने।आपदा प्रबंधन का सबसे बड़ा पुरस्कार भी नेताजी के नाम पर शुरू करने का फैसला केंद्र ने लिया है, जहाँ अब हर वर्ष सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबन्धन पुरस्कार दिए जाएंगे।

प्रेरक नेताजी

नेताजी ने एकबार कहा था- आज हमारी एक ही इच्छा होनी चाहिए कि हमारा भारत बच पाए, भारत आगे बढ़े। 21वीं सदी के चुनौतियों के बीच, जहाँ देश चीन, पाकिस्तान जैसे दुश्मन देशों से घिरा है, आंतरिक चुनौतियाँ नए नए स्वरुप में सामने आ रही है, नेताजी से प्रेरणा लेते हुए हम सभी भारतवासियों का भी यही लक्ष्य होना चाहिए कि देश के लिए जीएं।अपनी मेहनत और नवाचारी कृतित्व से देश को सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य करें। नेताजी के जीवन से अपने लक्ष्य के लिए अनथक अनवरत प्रयास करने की प्रेरणा भी मिलती है। तमाम चुनौतियों के बीच सच्चाई और देश-धर्म के रस्ते चलने को उर्जा मिलती है । सरेंडर की वजाए अपने मजबूत संकल्प के जरिये लक्ष्य प्राप्ति का जो उदाहरण नेताजी ने प्रस्तुत किया है, वह आने वाली सैंकड़ों पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। नेताजी के जीवन से युवाओं को सीख लेनी चाहिए कि अगर आप अपने दूरगामी लक्ष्यों के लिए कृतसंकल्पित हैंतो सफलता आपको अवश्य मिलेगी। देश के इस महानायक को जन्म जयंती पर नमन्! ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन (राष्ट्रीय परिषद)

24-26 दिसंबर, 2021 जबलपुर (महाकोशल प्रांत)

प्रस्ताव क्रमांक – 4

परिसर गतिविधियों में खेल बने प्राथमिकता

भारत ने ब्राजील ओलंपिक 2016 तक 28 पदक जीते थे परंतु 2021 में आयोजित टोक्यो ओलंपिक में 7 पदक एवं पैरालंपिक 2021 में 19 पदक, इस तरह कुल 26 पदक जीतकर भारत ने इतिहास रच दिया है। टोक्यो ओलंपिक एवं पैरालंपिक खेलों में भारत ने अपने इतिहास में सर्वाधिक पदक जीतकर सिद्ध कर दिया है कि हम खेल के क्षेत्र में बड़ी तेजी से उभर रहे हैं। पैरालंपिक खेलों में दिव्यांगों के शानदार प्रदर्शन से समाज में साकारात्मक माहौल बना है जो कि सराहनीय है। भारत का गौरव बढ़ाने क लिए समस्त ओलंपिक पदक विजेताओं का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह 67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन अभिनंदन करता है। केन्द्र सरकार के द्वारा खेलो इंडिया एवं फिट इंडिया अभियान के माध्यम से खेलों को प्रोत्साहन दिये जाने की विद्यार्थी परिषद प्रशंसा करती है। साथ ही, केन्द्र सरकार द्वारा खेलों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिये जाने वाले राजीव गांधी खेल रत्न सम्मान का नाम मेजर ध्यानचंद खेल रत्न सम्मान किये जाने की सराहना अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह 67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन करता है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह 67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्र सरकारों से यह मांग करता है कि –

1. 2021-22 का खेल बजट 2596.14 करोड़ रुपये है, जो पिछले वर्ष के मूल आवंटन से 230.78 करोड़ रुपये कम है। खेलों को प्रोत्साहन देने के लिए बजट को बढ़ाया जाय।
2. सरकारी एवं निजी उद्योगों द्वारा सीएसआर का 5 प्रतिशत खेलों को भी दिया जाय।
3. विद्यालयों एवं महाविद्यालयों स्तर पर खेल शिक्षक की नियुक्ति की जाए एवं खेल संकुल (स्पोर्ट कम्पलेक्स) को विद्यालयीन पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
4. देशभर में स्कूल खेल ओलिंपियाड का आयोजन किया जाय।
5. मानसिक स्वास्थ्य को देखते हुए योग एवं आत्म रक्षा (सेल्फ डिफेंस) गतिविधियों को विद्यालयों में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाय।
6. भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) द्वारा दी जाने वाली शोधवृत्ति प्रतिवर्ष 6600 रुपये है, जो कि बहुत कम है इसे तत्काल बढ़ाया जाय।
7. खेलों को प्रोत्साहन देने के लिए विश्वविद्यालयों में खेल आरक्षण (स्पोर्टस कोटा) बढ़ाया जाय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय की भांति खेल परिषद (स्पोर्टस काउंसिल) का गठन किया जाय। साथ ही, खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के लिए उचित यात्रा-भत्ते दिए जाने के उपयुक्त प्रावधान किए जाएं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 67 वां राष्ट्रीय अधिवेशन राज्य सरकारों एवं केन्द्र सरकारों से यह मांग करती है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार करियर के रूप में ले सकें। ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

राष्ट्रीय पदाधिकारी 2021-22

राष्ट्रीय अध्यक्ष	डॉ. छगनभाई पटेल - (मेहसाना, गुजरात)
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	डॉ. भूपेन्द्र सिंह - (बरेली, ब्रज)
	डॉ. अल्लम प्रभु - (गुलबर्गा, कर्नाटक)
	डॉ. पूनम सिंह - (छपरा, बिहार)
	डॉ. प्रदीप कुमार - (धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश)
	डॉ. राजशरण शाही - (लखनऊ, अवध
राष्ट्रीय महामंत्री	सुश्री निधि त्रिपाठी - (दिल्ली)
राष्ट्रीय मंत्री	श्री जीत सिंह - नोएडा (मेरठ)
	श्री मुथु रामलिंगम- मदुरै (दक्षिण तमिलनाडु)
	श्री गजेन्द्र तोमर - भोपाल (मध्यभारत)
	श्री हरिकृष्ण चौधरी - तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश)
	कु. प्रेरणा पवार - ठाणे (कोंकण)
	श्री राकेश दास - गुवाहाटी (असम)
	कु. साक्षी सिंह - वाराणसी (काशी)
	श्री होशियार सिंह मीणा (जयपुर)
राष्ट्रीय संगठन मंत्री	श्री आशीष चौहान (मुंबई)
राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री	श्री श्रीनिवास (पटना)
	श्री प्रफुल्ल आकांत (दिल्ली)
	श्री गोविन्द नायक (कोलकाता)
	श्री. एस. बालकृष्ण (भाग्यनगर)
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	श्री. गितेश सामंत (मुंबई)
राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष	श्री. दयानंद भाटिया (मुंबई)
केन्द्रीय कार्यालय मंत्री	श्री सुमित पाण्डेय (मुंबई)
केन्द्रीय सह कार्यालय मंत्री	श्री दिगंबर पवार (मुंबई)
केन्द्रीय सचिवालय सचिव	श्रीदेवानंद त्यागी (मुंबई)

अधिवेशन की झलकियां

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 JANUARY, 2022
DATE OF PUBLISHING: 8 JANUARY, 2022

POSTAL REGD. NO.: DL(C)-11/1409/2020-2022
POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI

अधिवेशन की झलकियां